RNI: UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

डाक पंजीयन संख्या
एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन
पी.439/2015-2017

द अचीवर टाइम्स

वर्ष : 9 अंक : 227
पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया
लखनऊ, रविवार, 10 दिसम्बर, 2023

एक नज़र

सांसद धीरज का अब कांग्रेस ने भी छोड़ा साथ, नोटों के अंबार मिलने पर बुरे फंसे साहू

नई दिल्ली। राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों से कई सौ बैग कैश मिला है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश बयान जारी कर कहा कि साहू के काम से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने कहा कि इसका जवाब के वही दे सकते हैं और उन्हें यह स्पष्ट करना भी चाहिए कि कैसे उनके ठिकानों से इनती बड़ी मात्रा में कैश मिल रहा है।

राज्यसभा सांसद धीरज साहू से कांग्रेस ने बनाई दूरी।

जेएनएन, नई दिल्ली। कांग्रेस के राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों से बेहिसाब दौलत मिलने से हर कोई हैरान है। धीरज के घर से मिले पैसों की गिनती में भी आयकर अधिकारियों के पसीने छूट गए। चार दिन बाद भी अधिकारी गिनती में लगे हैं। कई सौ बैग कैश अब तक मिल चुका है।

जयराम रमेश ने कही ये बात

दरअसल, कांग्रेस नेता जयराम रमेश बयान जारी कर कहा कि साहू के काम से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने कहा कि इसका जवाब के वही दे सकते हैं और उन्हें यह स्पष्ट करना भी चाहिए कि कैसे उनके ठिकानों से इनती बड़ी मात्रा में कैश मिल रहा है।

भाजपा ने बोला हमला

सांसद धीरज के घर बेहिसाब पैसे मिलने के बाद भाजपा ने कांग्रेस पर हमला बोला है। भाजपा का कहना है कि ये पैसै कांग्रेस के नेताओं का है। भाजपा सांसद संजय सेठ ने दावा किया है कि अब तक 300 करोड़ से ज्यादा पैसे जब्त किए जा चुके हैं।

सड़क हादसों में चार की जान गई

लखनऊ। कृष्णानगर इलाके में सड़क किनारे सवारियों के इंतजार में खड़े ई रिक्शा चालक का हाथ अचानक स्टार्ट बटन पर पड़ गया। इससे ई रिक्शा चालू होकर कानपुर की तरफ से आ रही रोडवेज बस से टकरा गया। ई रिक्शा चालक की बस से कुचलकर मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, आलमबाग में सड़क पर लगे बैरियर से बाइक टकरा गई। इससे बाइक से घर लौट रहे प्राइवेट चालक की मौत हो गई।

सरकारी योजनाओं को पलीता लगा रहे अधिकारी

समूह की गरीब महिलाओं के लिए सरकार की योजना पर पलीता लगा रहे ब्लॉक मिशन मैनेजर सन्तोष कुमारः रिशेंद्र द्विवेदी

द अचीवर टाइम्स प्रिंस पांडे

सीतापुर। सीतापुर जिले के ब्लॉक पहला ब्लॉक मिशन मैनेजर संतोष कुमार पर समूह की महिलाओ ने लगाए गंभीर आरोप। बताते चलें कि संगठन के बारे में जय श्री राम प्रेरणा महिला संगठन की अध्यक्षा अंजली मौर्या ने संगठन के बारे में जानकारी लेने के लिए बीएमएम कार्यालय पहुंची तो वहां पर मौजुद ब्लॉक मिशन मैनेजर संतोष कुमार ने उनसे अभद्रता से गाली देकर बात की और अंजली मौर्या के द्वारा पूरे मामले को लेकर जिम्मेदारो को प्रार्थना पत्र दिया गया तब फोन के मध्याम से धमकी भी दी गई। वही अंजली मौर्या ने बताया कि लगभग एक वर्ष पहले सीएलएफ के गठन में भी ब्लॉक मिशन मैनेजर संतोष सिंह द्वारा हेराफेरी की गई थी। जिसके संबंध में भी अंजली मौर्या द्वारा जिम्मेदारो को प्रार्थना पत्र दिया गया था लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई जिससे कि बीएमएम संतोष कुमार का हौसला बुलन्द हो गया। वही मंजू यादव ने बताया कि मेरे द्वारा ग्राम पंचायत मलेथू में विगत तीन वर्षो से समूह का संचालन किया जा रहा है और हमे कोई भी जानकारी नही दी जाती हैं मंजू देवी ने बताया कि ग्राम पंचायत मलेथू में स्वास्थय सखी का चयन किया गया जिसमे बीएमएम रिसेंद्र द्विवेदी और संतोष कुमार द्वारा घूस लेकर कक्षा 8पास कोमल देवी का चयन कर लिया गया और हमे मौका नहीं दिया गया जबकि हम ग्रेजुएट है पेपर तो हुआ लेकिन कॉपी चेक होने में धांधली कर के पास कर दी गई। मंजू यादव ने बताया कि उच्चाधिकारियों के द्वारा अगर आपने सामने बिठाकर पेपर और साक्षात्कार करा दिया जाए तो बीएमएम रिसेंद्र द्विवेदी और संतोष कुमार द्वारा की गई धांधली का सारा राज खुल जाए। इसके संबंध में मंजू यादव द्वारा कई बार सम्बन्धित जिम्मेदारो को शिकायती प्रार्थना पत्र भी दिया गया लेकीन कोई कारवाई नही हुई। वही सरदार भगत सिंह महिला स्वयं सहायता समूह ,नारी शक्ति ग्राम संगठन अध्यक्ष मीना देवी ने बीएमएम संतोष सिंह पर घूस लेने का आरोप लगाया है।मीना देवी ने बताया कि सीएलएफ के गठन में बीएमएम संतोष सिंह ने जिले पर फीस के नाम पर 10,000 रूपए लिए और बताया कि जिस प्रकार ग्राम संगठन में फीस पड़ी थी उसी प्रकार सीएलएफ में भी फीस पड़ती हैं। यही नहीं बल्कि 10,000 रूपए लेने के बाद बीएमएम संतोष सिंह ने 50,000 रूपयों की डिमांड की समूह की महिलाओं ने इतना पैसा देने से मना किया तो आई हुई सीएलएफ गठन की टीम को वापस भेज दिया और कहा कि जब पुरा पैसा दोगी तभी सीएलएफ का गठन किया जायेगा। मीना देवी ने बताया कि ग्राम संगठन के गठन में भी बीएमएम सन्तोष कुमार द्वारा 10,000 रूपए की घूस ली गई थी । महिलाओं ने बताया कि एप्लीकेशन देने के बाद दोनो बीएमएम द्वारा शिकायत कर्ताओं अराजक तत्वों द्वारा शिकायत वापस लेने के लिए धमकी दी जा रही है तथा शिकायत पत्र वापस न लेने पर समूह और संगठन से बाहर निकालने तथा हरिजन एक्ट लगवाने के लिए भी धमकाया जा रहा है महिलाए इन सबसे अत्यंत भयभीत है उच्चाधिकारियों द्वारा अगर जमीनी हकीकत की जांच की जाए तो फिर बीएमएम के सारे राज खुलेगा।पूरे मामले को लेकर पीड़ित महिलाओं ने खण्ड विकास अधिकारी पहला, मुख्य विकास अधिकारी सीतापुर, उपायुक्त स्वतः रोजगार सीतापुर को लिखित में शिकायती प्रार्थना पत्र दिया लेकिन अभी तक कोई भी कार्यवाई नही हुई है।

क्यो नहीं होती कार्यवाही?

लखनऊ।
अब सवाल यह उठता है कि जहां पर केन्द्र सरकार वा राज्य सरकार महिलाओं के उत्थान के बारे में बडी बडी बाते करती है वही सरकार की योजनाओ पर पानी फेरने वाले इन भ्रष्ट अधिकारियो पर कोई कारवाही होगी या नहीं। सवाल यह भी उठता है कि आखिर इतने प्रार्थना पत्र देने के बाद भी कोई कार्यवाही क्यों नहीं।

विकसित भारत संकल्प यात्रा

मोदी की गारंटी पर लोगों का भरोसा, हर गरीब वीआईपी

एजेंसी

नई दिल्ली। विकसित भारत संकल्प यात्रा से संबंधित कार्यक्रम में पीएम मोदी ने कहा कि हमारी सरकार माई-बाप वाली नहीं बल्कि मां-बाप की सेवा करने वाली सरकार है। मोदी की गारंटी पर लोगों का भरोसा। साथ ही कहा कि हर गरीब मेरे लिए वीआईपी।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से बातचीत कार्यक्रम में पीएम मोदी ने संबोधन दिया। जिसमें उन्होंने केंद्र सरकार की योजनाओं की उपलब्धियों पर जोर दिया। पीएम मोदी ने संबोधन के दौरान कहा कि चुनाव जीतने से पहले लोगों का दिल जीतना जरूरी है। पांचों राज्यों के विधानसभा चुनावों में से तीन राज्यों में भाजपा ने बंपर जीत हासिल की है। इसी को लेकर पीएम मोदी ने कहा कि लोगों ने स्पष्ट कर दिया है कि मोदी की गांरटी पर लोगों ने भरोसा जताया है।

विपक्षियों पर कटाक्ष करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि मुझे समझ नहीं आता देश हमारे विरोधियों पर भरोसा क्यों नहीं करता। उसका कारण यह है कि वह सिर्फ झूठी घोषणाएं ही करते हैं। चुनाव सोशल मीडिया से नहीं बल्कि जनता के बीच जाकर जीते जाते हैं। चुनाव जीतने से पहले लोगों का दिल जीतना जरूरी है। मोदी ने कहा कि यह संतोष की बात है कि जैसे-जैसे यात्रा वाहन अधिक से अधिक स्थानों पर पहुंच रहे हैं, लोगों का उत्साह बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि करोड़ों से अधिक लोग %मोदी की गारंटी% यात्रा से जुड़े हैं। बता दें विकसित भारत संकल्प यात्रा पूरे देश में सरकार की प्रमुख योजनाओं की संतृप्ति प्राप्त करने के उद्देश्य से शुरू की जा रही है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लाभ सभी लक्षित लाभार्थियों तक समयबद्ध तरीके से पहुंचे।

माई-बाप की सरकार नहीं, बल्कि सेवा करने वाली सरकार

वहीं संबोधन के दौरान पीएम मोदी ने विपक्षी दलों पर चुटकी लेते हुए कहा कि कुछ राजनीतिक दल यह बिल्कुल नहीं समझते हैं कि झूठ बोलकर कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता है। हमारी केंद्र सरकार ने देश की जनता के साथ सीधा संबंध स्थापित किया है। साथ ही कहा कि हमारी सरकरा माई-बाप सरकार नहीं, बल्कि माता-पिता की सेवा करने वाली सरकार है। उन्होंने कहा कि मैं आपकी सेवा के लिए लगातार काम कर रहा है।

चुनाव सड़कों पर जीते जाते हैंः पीएम मोदी

नई दिल्ली। उन्होंने मतदाताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि हाल के विधानसभा चुनाव परिणामों ने प्रदर्शित किया है कि मोदी की गारंटी उन लोगों को पसंद आती है जो इस पर विश्वास करते हैं। उन्होंने कहा कि लोगों का मानना है कि मोदी की गारंटी का मतलब सभी वादों को पूरा करने की गारंटी है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हालाँकि, सवाल यह है कि देश उन लोगों पर भरोसा क्यों नहीं करता जो हमारा विरोध करते हैं। कुछ राजनीतिक दल यह समझने में विफल रहते हैं कि झूठी घोषणाएँ करने से कुछ हासिल नहीं होगा। चुनाव सड़कों पर जीते जाते हैं, सोशल मीडिया पर नहीं। उन्होंने कहा कि चुनाव जीतने से पहले लोगों का दिल जीतना जरूरी है।

हमें गरीबों, वंचितों की परवाह- पीएम मोदी

पीएम मोदी ने संबोधन में कहा कि जिनकी किसी को परवाह नहीं, हम उनकी चिंता करते हैं। गरीबों, वंचितों के लिए कार्यालयों के दरवाजे बंद थे। लेकिन हमें सभी बंधनों को खोल दिया है। साथ ही उन्होंने कहा कि मेरे लिए वीआईपी हर गरीब, हर मां, हर बेटी, बहन है। हर किसान वीआईपी, हर युवा मेरे लिए वीआईपी है।

मोदी की गारंटी

प्रधानमंत्री ने कहा कि देश में हाल में हुए विधानसभा चुनावों के परिणामों की आज भी बहुत चर्चा हो रही है। उन्होंने कहा, ''इन चुनाव के नतीजों ने साफ कर दिया है कि मोदी की गारंटी में ही दम है। मैं सभी मतदाताओं का आभारी हूं, जिन्होंने मोदी की गारंटी पर भरोसा किया।'' 'विकसित भारत संकल्प यात्रा को जरूरतमंदों तक पहुंचने का बहुत बड़ा माध्यम बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि बहुत ही कम समय में अब तक सवा करोड़ से अधिक लोग 'मोदी की गारंटी' वाली गाड़ी तक पहुंचे हैं और उसका स्वागत किया है, उससे जुड़ने की कोशिश की है और उसे सफल बनाने का काम किया है।

दिल्ली में सुरक्षित नहीं सांसें

NCR में राजधानी सबसे प्रदूषित AQI पहुंचा 321

एजेंसी

नई दिल्ली। एनसीआर में शनिवार को दिल्ली की हवा सबसे अधिक प्रदूषित दर्ज की गई। वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 321 दर्ज किया गया, जो बेहद खराब श्रेणी है। 27 इलाकों में हवा बेहद खराब व छह इलाकों में खराब श्रेणी में दर्ज की गई। मौसम विभाग का अनुमान है कि मंगलवार तक हवा बेहद खराब श्रेणी से निकलकर खराब श्रेणी में पहुंच सकती है। सीपीसीबी के अनुसार फरीदाबाद में 240, गाजियाबाद में 242, नोएडा में 242, ग्रेटर नोएडा में 260 व गुरुग्राम में 251 एक्यूआई दर्ज किया गया। भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (आईआईटीएम) के मुताबिक शनिवार को हवा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर से चली। इस दौरान हवा की गति छह से 16 किलोमीटर प्रतिघंटे रही। रविवार को हवा उत्तर-पश्चिम दिशा से चलने का अनुमान है। हवा की गति आठ से 10 किलोमीटर प्रतिघंटे रहने के आसार है। वहीं, सुबह के समय धुंध व कोहरा छाने की आशंका है। ऐसे में हवा बेहद खराब श्रेणी में बनी रहेगी। सोमवार को हवा पश्चिम से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर से चलेगी।

27 इलाकों में बेहद खराब श्रेणी में रही हवा

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के मुताबिक दिल्ली में शनिवार को 27 इलाकों में हवा बेहद खराब श्रेणी में दर्ज की गई। इनमें नेहरू नगर में 376, बवाना में 368, विवेक विहार में 366, जहांगीरपुरी में 365, मुंडका में 356 व अशोक विहार में 353 सूचकांक दर्ज किया गया। साथ ही, छह इलाकों में हवा खराब श्रेणी में दर्ज की गई। यहां आईजीआई एयरपोर्ट टर्मिनल 3 में 295, श्री अरबिंदो मार्ग में 283, नजफगढ़ में 278, मथुरा रोड़ में 266 व दिलशाद गार्डन में 237 सूचकांक दर्ज किया गया, जो खराब श्रेणी है।

डीसीपी के आदेश को सिपाही दिखा रहे ठेंगा

ट्रांसफर होने के बावजूद पुराने कार्यस्थल पर ही जमे हुए हैं सिपाही अमन शुक्ला

द अचीवर टाइम्स राज जायसवाल

लखनऊ। डीसीपी उत्तरी द्वारा पुलिस विभाग के कई अधिकारी-कर्मचारियों का स्थानांतरण अन्य थाना चौकियों में किया गया था। इसके बाद भी कई पुलिसकर्मी पुराने स्थान पर ही बने हुए हैं।

लखनऊ - राजनीतिक आकाओं और बड़े पुलिस अफसरों की पैरवी पर ट्रांसफर के बावजूद कई महीनों से एक ही थानों में जमे हैं इंदिरा नगर के सिपाही अमन शुक्ला इस पुलिस कर्मी अमन शुक्ला का दूसरे थानों में तबादला हो चुका है, लेकिन ऊंची पैरवी की वजह से कई महीनो से इनकी रवानगी नहीं हो पा रही है। ट्रांसफर होने के बावजूद कई महीनों से उसी थाने इंदिरा नगर पर जमे पुलिसकर्मी अमन शुक्ला अवैध कमाई का जरिया बन चुके हैं। थानाक्षेत्र की स्थित से पूरी तरह वाकिफ यह पुलिस कर्मी अमन शुक्ला ठेले वालों से लेकर बड़े व्यापारियों तक में अपनी अच्छी पहचान बना चुके हैं। इसी का फायदा उठाकर वह हर महीने मोटी कमाई कर रहे हैं। नए थानेदार के आने पर अवैध कमाई में माहिर यह पुलिस वाले उनके खास बन जाते हैं। थानेदार अपने-अपने कारखासों को बचाने के लिए शासन स्तर तक जुगाड़ लगाने में जुट जाते हैं। हालां,कि इनकी रवागनी का आदेश जारी करने वाले यही अफसर कई महीने से इन्हें संरक्षण भी दे रहे हैं,

34	112172363	मु0आ0 1001 अभय कुमार	उत्तरी जोन	थाना इन्दिरानगर
35	182465576	आरक्षी 7285 बनारसी	थाना गाजीपुर	थाना इटौंजा
36	192465133	आरक्षी 2690 मंजीत सिंह	थाना विकासनगर	थाना मड़ियांव
37	192465058	आरक्षी 2925 मनीष सिंह	थाना विकासनगर	थाना गाजीपुर
38	192468275	आरक्षी 2584 सोनू कुमार	थाना अलीगंज	थाना जानकीपुरम
39	182465013	आरक्षी 7412 गोविन्द कुमार पाल	थाना गाजीपुर	थाना गुडम्बा
40	182465329	आरक्षी 7443 कंचन सिंह वर्मा	थाना मड़ियांव	थाना जानकीपुरम
41	182536335	आरक्षी 8657 सूर्य प्रताप सिंह	थाना इटौंजा	महिला थाना द्वितीय
42	195060298	मु0आ0 5138 [illegible]	थाना इटौंजा	महिला थाना द्वितीय
43	182465420	अमन कुमार शुक्ला	थाना इन्दिरानगर	थाना अलीगंज

जिसकी वजह से थानों से अधिक समय बिता चुका है इंदिरा नगर इंस्पेक्टर सुनील तिवारी तक मलाई काट रहे हैं। तबादले की जद में ऐसे पदाधिकारी व जवान जिनका थानों से मोहभंग नहीं हो रहा है। अमन शुक्ला सिपाही जो इंदिरा नगर थाने से अलीगंज थाने में तैनात होने के बावजूद भी इंदिरा नगर थाने में कारखासी के बल कई लाखों रुपए अवैध गतिविधियों से वसूल रहा है यह बात किसी से छिपी नहीं है जैसे की इंदिरा नगर थाना क्षेत्र में मिट्टी खनन की पासिंग मुंशी पुलिया चौराहे पर लगे पान चाय के खुमचे क्षेत्र में हो रही अवैध प्लाटिंग अवैध कब्जे इन सब पर करखास अमन शुक्ला की देखरेख रहती है उच्च अधिकारियों से पहुंच और मैनेज कर ट्रांसफर होने के बावजूद भी इंदिरा नगर थाने में अपने जुगाड़ के बल पर कायम है एक थाने से दूसरे थाने जुगाड़ के दम पर पोस्टिंग से लेकर यह हर महीने मोटी कमाई कर रहे हैं। चिनहट थाना क्षेत्र अंतर्गत भेलू गांव के तालाब में मिट्टी खानन का कार्य जारी है परमिशन की आड़ में इंदिरा नगर थाना क्षेत्र के कॉलोनी में दर्जनों डंपर मिट्टी से भरे दौड़ रहे हैं जो की परमिशन से परे हैं परमिशन में इंदिरा नगर थाना के कारखास अमन शुक्ला के संरक्षण मे दर्जनों डंपर चल रहे हैं जो की परत डंपर हजार रुपए एक रात के हिसाब से मैनेज कर कॉलोनी में मिट्टी बेची जा रही है!

अस्तांतरण नीति पर ट्विटर पर उच्च अधिकारियों ने नहीं दिया जवाब

राजधानी लखनऊ के कमिश्नरेट पुलिस में गोलमाल का खेल चल रहा है बता दे ट्विटर पर सवाल का नहीं दिया जा रहा है जवाब मामले को दबाने में लगे प्रशासनिक अधिकारी महीना बीत जाने के बावजूद भी इंदिरा नगर थाने में सिपाही अमन शुक्ला का ट्रांसफर होने के बावजूद भी नहीं हुई रवानगी उच्च अधिकारियों से नीचे तक सभी को कारखास शुक्ला ने कर रखा है मैनेज ट्विटर पर भी नहीं आया जवाब जिससे साफ जाहिर होता है अधिकारियों की मिली भगत है साफ अमन शुक्ला कारखास कर रहा है मनमानी इंदिरा नगर थाने में हो रही अवैध गतिविधियों पर जम कर वसूली ऊपर तक होती है मैनेज उत्तर प्रदेश के मुखिया मुख्यमंत्री के आदेशों क हो रहा उलघन सबका साथ सबका विकास की खुली रही पोल इंदिरा नगर थाने में तैनात अमन शुक्ला मनमानी के आगे अधिकारी भी कार्यवाही में हो रहे फेल साफ जाहिर होता है सिपाही अमन शुक्ला पिछले कई महीनो पहले इनका ट्रांसफर अलीगंज थाना क्षेत्र में हुआ जिसके बावजूद ऊंची पहुंच और अधिकारियों के जी हुजूरी के बल पर इंदिरा नगर थाने में काट रहे मलाई उच्च अधिकारी नहीं कर रहे कार्रवाई

फिकर अभियान के माध्यम से किया गया जागरुक लड़कियां निडर करें मतदान साथ है फिकर अभियान

द अचीवर टाइम्स, निखिल मिश्रा

लखनऊ । उत्तर प्रदेश राजधानी लखनऊ में लडकियां किसी के फैसले पर आपना एक क़ीमती वोट न दे, दूसरों की सोंच पर खुद के फैसले न ले इसलिए लखनऊ में रेड ब्रिगेड और ऐमरेन फाउंडेशन की अध्यक्षता में लड़की निडर करे, वोट की फ़िकर नामक अभियान चलाया जा रहा हैं। अभियान का 9 दिसम्बर को सोहनलाल इंटर कॉलेज-राजेंद्र नगर, यशोदा रस्तोगी इंटर कॉलेज में आयोजित किया गया कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस चल रहे अभियान में लडकियों को एक वोट की महत्त्वता बताई गई, साथ ही उन्हें वोट देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। सोहनलाल इंटर कॉलेज में टीम सदस्य पूजा जी ने छात्राओं को वोट देने के लिए जागरूक किया। सोहन लाल इंटर कॉलेज की प्रिन्सिपल अर्चना पाठक जी ने कहा कि भारत के हर एक नागरिक को वोट देना चाहिए और खास कर जो महिलाएं ये सोचकर वोट नहीं देती हैं कि उनके एक वोट से क्या हो जाएगा, तो उन्हें बता दे कि एक वोट देने से हम अपनी सही सरकार चुन सकते हैं। उन्होंने वोट की महत्त्वता बताई और छात्राओं से/महिलाओं से अपना एक क़ीमती वोट देने की अपील की। वहीं यशोदा रस्तोगी गर्ल इंटर कॉलेज में टीम सदस्य लक्ष्मी जी ने छात्राओं को वोट से संबंधित सभी जरुरते बताई । उन्होंने कार्यक्रम को इस प्रकार से प्रस्तुत किया कि सभी छात्राओं ने उन्हें ध्यान पूर्वक सुना। यशोदा रस्तोगी इंटर कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. कुसुम लता राय जी ने इस पूरे कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए रेड ब्रिगेड टीम का धन्यवाद कहा और छात्राओं को वोट देने के लिए जागरूक किया और उनका हौसला बढ़ाया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आई 181 की काउंसलर सोनल श्रीवास्तव जी ने बच्चियों को सेल्फ डिफेंस की दी गई ट्रेनिंग के बारे में बताया और सेल्फ डिफेंस, वोट की महत्त्वता बताई। साथ ही दोनों कॉलेजों में टीम सदस्य पूजा जी ने और दीपक, खुशी, शाश्वत ने मिलकर छात्राओं को सेल्फ डिफेंस की ट्रेनिंग दी।

उद्योगों में करें सौर ऊर्जा का इस्तेमाल

सफेदाबाद (बाराबंकी)। सौर ऊर्जा एवं जैव ऊर्जा का उपयोग उद्योगों में किए जाने को लेकर कार्यशाला का आयोजन यूपीनेडा एवं जीएम डीआईसी के सहयोग से गोकुल रिजार्ट सफेदाबाद में किया गया। सीडीओ एकता सिंह ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों में किए जाने का आह्वान किया। निदेशक यूपीनेडा लखनऊ अनुपम शुक्ला ने उप्र सौर ऊर्जा नीति 2022 के परिपेक्ष्य में विभिन्न लाभ, अनुदान एवं इसके उपयोग से पर्यावरण को संरक्षित किए जाने के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। वरिष्ठ परियोजना अधिकारी अजय कुमार ने सोलर संयंत्र अधिष्ठापन के बारे में विस्तार से बताया। विभिन्न फर्मों से आए डेवलपर्स की ओर से रेस्को एवं कैपक्स मोड से सोलर पावर प्लांट की स्थापना के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया प्रदर्शन माल में राज्यसभा सांसद धीरज साहू का पुतला फूंका, कांग्रेस पर लगाए भ्रष्टाचार के आरोप

द अचीवर टाइम्स निर्मल सैनी/विकास सैनी

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी की मलिहाबाद विधानसभा से विधायक जय देवी कौशल के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए राज्यसभा सांसद धीरज साहू का पुतला फूंका और प्रदर्शन किया। आपको बता दें कि मलिहाबाद विधानसभा के अंतर्गत माल में क्षेत्रीय विधायक जय देवी कौशल के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने माल कस्बे के मुख्य तिराहे पर राज्यसभा सांसद धीरज साहू का पुतला फूंक कर प्रदर्शन किया।मिली जानकारी अनुसार झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में आयकर विभाग की कार्रवाई में राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों से लगभग 220 करोड़ की नगदी मिलने के बाद जगह-जगह बीजेपी कार्यकर्ता कांग्रेस पार्टी पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए कह रहे हैं कि मोहब्बत की दुकान में नोटों के बण्डल मिल रहे हैं। बीजेपी कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस पार्टी के खिलाफ जमकर नारेबाजी की है।बीजेपी कार्यकर्ताओं के कहना है। जब कांग्रेस पार्टी के सांसदों के पास इतनी नकदी निकल सकती है तो कांग्रेस के सुप्रीमो सोनिया गांधी और राहुल गांधी के पास कितनी नकदी होगी।

एक नज़र

डीएम और एसपी ने समाधान दिवस के अवसर पर फूलबेहड़ थाने में सुनी जन समस्याएं

द अचीवर टाइम्स रमेश चंद्र

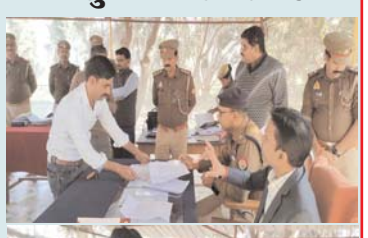

लखीमपुर खीरी। जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक खीरी की अध्यक्षता में थाना फूलबेहड़ व थाना शारदानगर में हुआ ÷थाना समाधान दिवस÷ का आयोजन हुआ। सुनी जन समस्याएं। माह के द्वितीय शनिवार को जनपद के समस्त थानों पर थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी खीरी, महेन्द्र बहादुर सिंह व पुलिस अधीक्षक खीरी, शगणेश प्रसाद साहा द्वारा थाना फूलहबेहड़ व थाना शारदानगर पर उपस्थित रहकर ÷थाना समाधान दिवस÷ की अध्यक्षता की गई। इस दौरान प्राप्त जनशिकायतों की सुनवाई कर त्वरित व निष्पक्ष जांच कराकर समयबद्ध रूप से विधिक निस्तारण सुनिश्चित करने हेतु संबंधित को निर्देशित किया गया। इसके अतिरिक्त समस्त क्षेत्राधिकारीगण द्वारा सर्किल के थानों पर उपस्थित रहकर जनशिकायतों का निस्तारण कराया गया।

पुलिस द्वारा एक शातिर अभियुक्त को एक अदद अवैध तमन्चा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार किया गया

द अचीवर टाइम्स दीपक सिंह

शाहजहांपुर। पुलिस अधीक्षक शाहजहाँपुर अशोक कुमार मीणा के कुशल निर्देशन , पुलिस अधीक्षक नगर सुधीर जायसवाल व क्षेत्राधिकारी सदर अमित चौरसिया के कुशल पर्यवेक्षण मे चलाये जा रहे अवैध शस्त्र रोकथाम हेतु सघन अभियान के क्रम मे प्रभारी निरीक्षक थाना रोजा राजीव कुमार की पुलिस टीम द्वारा अपराध की दुनिया मे सक्रीय अभियुक्त अंकित शुक्ला उर्फ छोटू पुत्र ज्ञानेश शुक्ला निवासी नाहिल थाना पुवायां जनपद शाहजहाँपुर उम्र करीब 24 वर्ष को रेलवे अण्डर पास से स्टेशन की ओर करीब 20 कदम दूरी से एक अदद अवैध तमन्चा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार किया गया।

राशन डीलर के भतीजे की महिला से दबंगई करते हुए वीडियो हुई वायरल

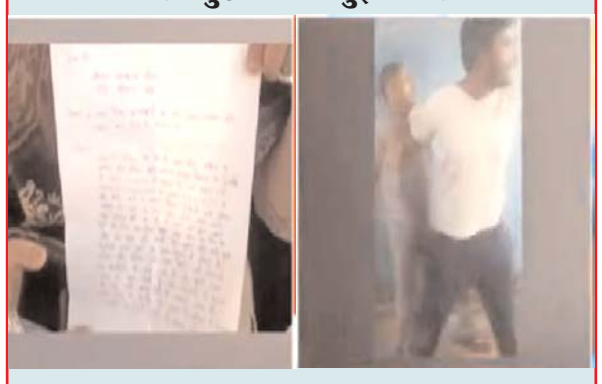

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। धौलाना तहसील के गांव शेखपुरा खिचरा का मामले सामने आया है जहां एक महिला ने राशन डीलर के भतीजे पर काम राशन का आरोप की बात कही तो राशन डीलर का भतीजा दबंगई करता हुआ महिला पर आग बबूला हो गया जहाँ आसपास खड़े लोगों ने राशन डीलर के भतीजे की वीडियो बना ले जो तेजी से वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। वायरल वीडियो में राशन डीलर के भतीजे को कुछ लोग पीछे की ओर खींचते हुए समझते हुए नजर आ रहे हैं देखना अब है कि आपूर्ति विभाग इस मामले को संज्ञान में लेकर राशन डीलर पर क्या कार्रवाई करता है तो वही महिला ने जिला प्रशासन व आपूर्ति विभाग के नाम प्रार्थना पत्र देकर उचित कार्रवाई करने की मांग की है।

भिक्षावृत्ति कर रहे 3 बच्चों को रेस्क्यू कर बाल कल्याण समिति को सौपा

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देशन में बाल भिक्षावृत्ति के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के अंतर्गत थाना एएचटीयू टीम व जिला बाल संरक्षण इकाई द्वारा थाना हापुड़ नगर क्षेत्रांतर्गत भिक्षावृत्ति कर रहे 03 बच्चों को रेस्क्यू कर मेडिकल परीक्षण के पश्चात अग्रिम आवश्यक कार्यवाही हेतु बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

पीछे देखे बिना कार का दरवाजा खोलने से टकराई बाइक, पिता-पुत्र,मां घायल

द अचीवर टाइम्स निर्मल सैनी/विकास सैनी

लखनऊ। माल थाना क्षेत्र अंतर्गत थाने के सामने एक कार चालक ने पीछे देखे बिना ही कार का दरवाजा खोल दिया। इससे कार का दरवाजा नजदीक से गुजर रही एक बाइक पर सवार होकर जा रहे पिता-पुत्र मां से टकरा गया और अनियंत्रित होकर सामने से आ रहे डंफर ने टक्कर मार दी और तीनों नीचे गिर गए और घायल हो गए। उन्हें इलाज के लिए नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया जहां पुत्र की हालत को गंभीर देखते हुए ट्रामा सेन्टर रेफर कर दिया। आपको बता दें कि मलिहाबाद थाना क्षेत्र अंतर्गत कसमंडी खुर्द निवासी पचास वर्षीय विजय प्रकाश अपनी सैतालीस वर्षीय पत्नी आशा व अपने बाइस वर्षीय बेटे रोहित के साथ शनिवार को शाम लगभग पांच बजे माल थाना क्षेत्र के शाहमऊ गांव में विवाह समारोह में शामिल होने जा रहे थे,तभी माल थाने के सामने पहुंचे ही थे कि सड़क किनारे खड़ी स्विफ्ट डिजायर कार ने अचानक गाड़ी का दरवाजा खोल दिया जिससे बाइक अनियंत्रित हो गई और सामने से आ रहे तेज रफ्तार डंफर ने जोरदार टक्कर मार दी जिससे पिता मां छिटक कर दूर जा गिरे व पुत्र डंफर की चपेट में आ गया जिससे पैर बुरी तरह से कुचल गया सूचना पर तत्काल प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार त्रिपाठी ने तीनों को नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया जहां पिता व मां को इलाज के बाद घर भेज दिया व बेटे की हालत को गंभीर देखते हुए चिकित्सकों ने ट्रामा सेन्टर रेफर कर दिया।

पुलिस ने उतरवाए 152 लाउडस्पीकर

बाराबंकी। पुलिस ने शनिवार को पूरे जिले में सार्वजनिक व धार्मिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकरों को लेकर अभियान चलाया। इस दौरान 868 स्थानों पर लाउडस्पीकर चेक किए गए। हैरत की बात यह रही कि 597 लाउडस्पीकर मानक के विपरीत संचालित होते पाए गए। पुलिस ने 152 लाउडस्पीकर उतरवा दिए। एसपी के निर्देश पर सभी सीओ व थाना प्रभारी शनिवार सुबह एक साथ सार्वजनिक व धार्मिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकरों की चेकिंग करने में लग गए। शहर में सीओ सिटी डॉ. बीनू सिंह व कोतवाल अजय कुमार त्रिपाठी की टीम ने पीरबटावन, लखपेड़ाबाग, आवास विकास, रसूलपुर, पैसार शहर विभिन्न मोहल्ले में अभियान चलाया और 126 लाउडस्पीकर मानक के विपरीत पाए गए, जिनमें 19 उतरवा दिए गए।

हसनगंज पुलिस का सराहनीय कार्य

❖गोवध/पशुक्रूरता अधिनियम मामले में फरार चल रहे वांछित अभियुक्तों को गिरफ्तार कर भेजा जेल।

द अचीवर टाइम्स, महेन्द्र कुमार

हसनगंज (उन्नाव)। पुलिस अधीक्षक उन्नाव के द्वारा वांछित अभियुक्तों के विरुद्ध चलाए जा रहे अधिनियम के तहत अपर पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन व क्षेत्राधिकार हसनगंज के निकट पर्यवेक्षण में कोतवाली हसनगंज टीम के द्वारा गो तस्करी करने वाले वांछित अभियुक्त मोहम्मद उवैस पुत्र सलीम कुरैशी निवासी नागलिया अकील थाना अजीमनगर जनपद रामपुर , जलीश उर्फ पप्पू पुत्र खलील निवासी नागलिया अकिल थाना अजीम नगर जनपद रामपुर व इमरान पुत्र मोहम्मद अख्तर अली मेखपुर थाना अजीमनगर जनपद रामपुर को हसनगंज कोतवाली प्रभारी राजेश्वर त्रिपाठी व उपनिरीक्षक धर्मवीर सिंह , जितेंद्र नादर , प्रशांत कुमार , दीपक कुमार , प्रवीण कुमार , प्रमोद कुमार के द्वारा पुछडा तिराहा हसनगंज से धर दबोचा व मुकदमा अपराध संख्या 107/23 धारा 3/5ए/8 गोवध अधिनियम 11(घ) पशुक्रूरता अधिनियम में गिरफ्तार कर भेजा जेल।

हमारा प्यारा हिंदुस्तान साहित्य संस्था के तत्वाधान में विराट अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजित हुआ

❖ हमारा देश है जिसको धरा का स्वर्ग कहते हैं-अशोक गोयल, राष्ट्रीय कवि।

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। हापुड़ के पिलखुवा से खबर हमारा प्यारा हिंदुस्तान साहित्य संस्थाके मंच पर आई जी टी ऐप के द्वारा विराट कवि सम्मेलन का आयोजन देश के अनेक प्रांत के कवियों और राष्ट्रीय कवित्री गजलकारों द्वारा लगभग 25 कवियों की शानदार उपस्थिति रही लगभग 2घंटे 30 मिनट तक सभी ने मंच पर हास्य वीर श्रृंगार रस की एक से बढ़कर एक रचना प्रस्तुतकी । अध्यक्षता वरिष्ट साहित्यकार देश के जाने माने कवि श्री अशोक गोयल पिलखुवा ने की मुख्य अतिथि गीतकार देवी प्रसाद पाण्डेय प्रयागराज गजल सम्राट पंडित नरेन्द्र द्विवेदी, हमारा प्यारा हिंदुस्तान की राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रियदर्शनी राज मोहिता जी पीयूष योगी, कुंदन क्रांति, अमर जीत सिंह, कयूम खां। संचालन अपने चिर परिचितअंदाज में अनुज पाठक ग्वालियर कुमार मनोज इत्यादि ने अपनी गरिमामय उपस्थिति दर्ज कराई।धन्यवाद ज्ञापन संस्थापक निर्दोष जैन लक्ष्य ने अंत में अपनी कुछ लाइनों से ,,,चलो प्यार की गंगा हम बहाएं, हम एक हैं एक जग को बताएं मंदिर अपना मस्जिद अपना अपना ही गुरुद्वारा है किस मिट्टी को अलग करूं जब सारा देश हमारा है । अंत में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कवि अशोक गोयल ने सभी रचनाकारों को धन्यवाद दिया।

माल थाना जाम में फंसी पुलिस उपायुक्त की गाड़ी

समस्या

जाम को खुलवाने में पुलिस के पसीने छूटे

द अचीवर टाइम्स निर्मल सैनी/निखिल मिश्रा

लखनऊ। लखनऊ कमिश्नरेट के माल थाना क्षेत्र अंतर्गत पुलिस उपायुक्त पश्चिमी राहुल राज की फंसी गाड़ी। आपको बता दें कि माल थाना क्षेत्र अंतर्गत जाम की स्थिति से निपटने के लिए प्रशासन के प्रयास नाकाफी साबित हो रहे हैं।शनिवार को थाना क्षेत्र अंतर्गत एक बार फिर व्यवस्था बिगड़ गई और माल जेहटा मोड़ के पास जाम लग गया। खुद पुलिस उपायुक्त पश्चिमी राहुल राज भी जाम में फंस गए। लगे जाम को खुलवाने के लिये पुलिस जवानों के पसीने छूट गए।

सुबह-शाम लगता भीषण जाम

कस्बे का मुख्य चौराहा सकरा होने तथा बड़े वाहनों के ज्यादा आवागमन से कस्बे में जाम की समस्या होती है। सुबह हो या शाम, चौराहे पर रोज जाम लगा रहता है। बड़े वाहनों के ज्यादा आवागमन से चौराहे पर रोज जाम लग जाता है। रोज लगने वाले जाम से लोगों को आवागमन में काफी परेशानियां झेलनी पड़ती हैं।

जाम के झाम में फंस जाती एंबुलेंस

थाना क्षेत्र अंतर्गत लगने वाले जाम से कभी कंभी तो एंबुलेंस भी जाम की झाम में फंस जाती हैं। तो कभी स्कूल जाते समय छोटे नन्हे मुन्ने बच्चे जाम की झाम में फंसे रहते हैं। कभी-कभी तो घंटे जाम की समस्या बनी रहती है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का ग्राम वासियों ने किया स्वागत

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। विकास खंड सिकंदरपुर सरोसी क्षेत्र के ऐरा भदियार में विकसित भारत संकल्प यात्रा का ग्राम वासियों ने स्वागत किया। कार्यक्रम में पहुंचे सांसद साक्षी महाराज व सदर विधायक पंकज गुप्ता ने कहा कि विकास और जनकल्याण की योजनाओं का जनता को लाभ देने के लिए यात्रा निकाली है। विधायक ने लाभार्थियों से संवाद करते हुए कहा कि देश के प्रधानमंत्री ने साल 2014 में जब केंद्र में सत्ता संभाली थी तो उनका लक्ष्य था कि सरकारी योजनाओं में भ्रष्टाचार हटाना है। इसलिए उन्होंने जीरो बैलेंस पर बैंकों में खाते खुलवाए थे। पहले अमीरों के तो बैंक में खाते थे लेकिन गरीबों का बैंक में खाता नहीं था। मोदी जी ने जन धन योजना चलाकर सभी बैंकों से कहा कि गरीबों की गारंटी मोदी लेते हैं और उसी का कमाल है कि आज करीब 40 लाख से ज्यादा देश में जनधन खाता है और केंद्र की सरकार उसमें 2000 रुपये भेज रही है। कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में लोगों को जागरूक करना और प्रत्येक लाभार्थी तक उन्हें पहुंचाना है। इस दौरान सांसद साक्षी महाराज जिला अध्यक्ष अवधेश कटियार सदर विधायक पंकज गुप्ता जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष अरुण सिंह, जिला प्रभारी मंत्री अर्चना मिस्त्रा, उप डिप्टी डायरेक्टर विकास सिंह, एडीओ पंचायत विनोद वर्मा, कृषि उप निदेशक मुकुल तिवारी, बीडीओ उत्तम चंद तिवारी सचिन मिस्त्रा तहसीलदार अविनाश चौधरी कानूनगो बीके वर्मा सचिव ग्राम विकास अधिकारी अवधेश श्रीवास्तव ग्राम प्रधान संजीत वर्मा गंगा प्रसाद प्रधान अजीत कुमार कमल किशोर प्रधान सथरा संजय परमनी सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

अज्ञात कारणों के चलते युवती ने लगाई फांसी

द अचीवर टाइम्स मुकेश राजपूत

उन्नाव। माखी थाना क्षेत्र के झाऊखेडा में किशोरी का शव फांसी पर लटका मिला। परिजनों ने पुलिस को सूचना दी । सुचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया । पुलिस मामले की जांच कर रही है। थाना क्षेत्र के झाऊखेडा निवासी नन्दिनी (17)राजेन्द्र रावत हाई स्कूल की छात्रा थी। शनिवार को सायं चार बजे घर के अंदर दूसरी मंजिल पर दुपट्टे से उसका शव फांसी पर लटका मिला ।गांव में अपनी दादी लीलावती के साथ रहती थी। परिजनों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है ।थाना प्रभारी वीरबहादुर सिंह ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है रिपोर्ट आने पर कार्रवाई की जायेगी। किसी ने कोई आरोप नहीं लगाया है । उसका बड़ा भाई बबलू आर्मी में तैनात है। माता शिवकांती पिता राजेन्द्र बेटी संगीता के साथ दिल्ली में रहते है। गांव में दो छोटे भाई अजीत 11 और सुजीत (8) गांव में रहते हैं। शनिवार को अजीत का जन्मदिन था। उसी सामान लेने दादी गई थी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जायेगी । अभी तक किसी ने कोई आरोप नहीं लगाया है ।

अच्छी खबर... यूपी में यातायात पुलिस के 2287 रिक्त पदों पर होगी तैनाती

संवाददाता

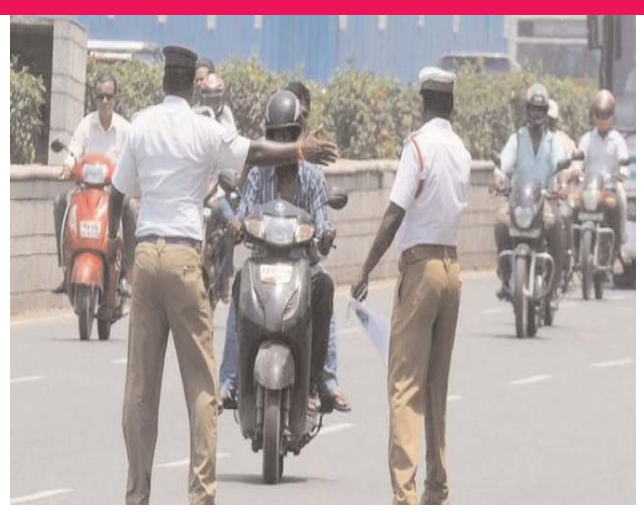

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में यातायात पुलिस के 2287 रिक्त पदों पर तैनाती होगी। सभी कमिश्नरेट और एडीजी जोन से मुख्य आरक्षी और आरक्षी मांगे गए हैं। मुख्य आरक्षी के सौ, आरक्षी के 2187 रिक्त पदों पर तैनाती होनी है। इनका चयन ज्येष्ठता के आधार पर किया जाएगा। कर्मियों के चयन के दौरान उनके ओवरवेट नहीं होने का खास ध्यान रखने को कहा गया है। लखनऊ में डीजीपी मुख्यालय यातायात पुलिस में रिक्त चल रहे मुख्य आरक्षी और आरक्षी के 2287 पदों को भरने की तैयारी में है। इसके लिए सभी एडीजी जोन और पुलिस कमिश्नर से नागरिक पुलिस के मुख्य आरक्षी और आरक्षी मांगे गए हैं। इनको प्रशिक्षण देने के बाद जिलों में तैनात किया जाएगा। इससे कमिश्नरेट और जिलों में होने वाली जाम की समस्या से खासी राहत मिल सकती है। बता दें कि डीजीपी विजय कुमार ने हाल ही में सभी एडीजी जोन और पुलिस कमिश्नर को पत्र भेजकर यातायात पुलिसकर्मियों के नामांकन, चयन, प्रशिक्षण, नियुक्ति और स्थानांतरण आदि के संबंध में जारी सभी आदेशों को अतिक्रमित करते हुए नए आदेश जारी किए हैं। दरअसल, प्रदेश के समस्त कमिश्नरेट एवं जिलों में नागरिक पुलिस से यातायात पुलिस के लिए मुख्य आरक्षी के 1512 और आरक्षी के 4336 पद आवंटित हैं। यातायात निदेशालय द्वारा जिलों से प्राप्त सूचना के मुताबिक इनमें मुख्य आरक्षी के 100 पद और आरक्षी के 2187 पद रिक्त चल रहे हैं। इन पदों को भरने के लिए 35 वर्ष से कम आयु के आरक्षी और 55 वर्ष से कम उम्र के मुख्य आरक्षी मांगे गए हैं। इनका चयन ज्येष्ठता के आधार पर किया जाएगा। कर्मियों के चयन के दौरान उनके ओवरवेट नहीं होने का खास ध्यान रखने को कहा गया है।

सातों कमिश्नरेट में आरक्षियों की कमी

उल्लेखनीय है कि प्रदेश के सातों कमिश्नरेट में आरक्षी के पद रिक्त चल रहे हैं, जबकि मुख्य आरक्षी स्वीकृत पदों से ज्यादा तैनात हैं। लखनऊ में 119 मुख्य आरक्षियों की जगह 162 तैनात हैं। जबकि 495 आरक्षी में से 171 पद रिक्त हैं। गौतमबुद्धनगर में 87 की जगह 227 मुख्य आरक्षी तैनात हैं, जबकि 179 आरक्षी के पद रिक्त हैं। कानपुर में भी 38 की जगह 227 मुख्य आरक्षी हैं, जबकि आरक्षी के 117 पद रिक्त हैं। वाराणसी में 78 की जगह 110 मुख्य आरक्षी हैं, जबकि आरक्षी के 104 पद रिक्त हैं। आगरा में 73 की जगह 168 मुख्य आरक्षी तैनात हैं, जबकि आरक्षी के 161 पद रिक्त हैं। प्रयागराज में 60 की जगह 94 मुख्य आरक्षी हैं, जबकि आरक्षी के 104 पद रिक्त हैं। गाजियाबाद में 78 के बजाय 260 मुख्य आरक्षी हैं, जबकि आरक्षी के 31 पद रिक्त हैं।

यूपी के बिजली ग्राहकों को बड़ा झटका, नहीं मिलेगी राहत; लटक गया ये फैसला

संवाददाता

लखनऊ। यूपी के बिजली उपभोक्ताओं को राहत नहीं मिलेगी। ईंधन अधिभार चार्ज कम करने का फैसला लटक गया है। बिजली दरों में 18 से 69 पैसे प्रति यूनिट तक कमी होने का अनुमान था। लेकिन विद्युत नियामक आयोग ने इसे तिमाही के तौर पर कम नहीं किया है। उत्तर प्रदेश के बिजली उपभोक्ताओं को राहत मिलने की उम्मीद नहीं है। क्योंकि ईंधन अधिभार चार्ज के रूप में 18 से 69 पैसे प्रति यूनिट तक की कमी के मामले को टाल दिया गया है। प्रदेश की बिजली वितरण निगमों की ओर से 20 अक्तूबर को विद्युत नियामक आयोग में वर्ष 2023-24 के अप्रैल, मई, जून यानी पहली तिमाही के लिए ईंधन अधिभार में 35 पैसा प्रति यूनिट के आधार पर श्रेणी वार दरें कम की जाती हैं। पहली तिमाही में दाखिल प्रस्ताव के तहत अलग-अलग श्रेणी के विद्युत उपभोक्ताओं को 18 से लेकर 69 पैसे प्रति यूनिट तक अगले तीन महीना तक बिजली दरों में कमी होनी थी। लेकिन विद्युत नियामक आयोग ने इसे तिमाही के तौर पर कम नहीं किया है। आयोग ने तर्क दिया है कि केंद्र सरकार की ओर से माहवार ईंधन अधिभार शुल्क के संबंध में नियम बनाया गया है। इसलिए अब ईंधन अधिभार का मामला उसी नियमावली के तहत थ्रू अप के समय देखा जाएगा। अभी इस पर कोई निर्णय नहीं लिया जाएगा।

उपभोक्ता परिषद ने लगाया नियमों की अनदेखी का आरोप

उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष व राज्य सलाहकार समिति के सदस्य अवधेश कुमार वर्मा का कहना है कि रेगुलेटरी फ्रेमवर्क के तहत विद्युत नियामक आयोग बिजली दरों में कमी न करने के पीछे जो तर्क दे रहा है, वह पूरी तरह गलत है। यह उपभोक्ता के साथ धोखा है। इसके विरोध में उपभोक्ता परिषद ने विद्युत नियामक आयोग के सदस्य तकनीकी से अपना विरोध दर्ज कराया है।

वर्मा ने कहा कि जब प्रदेश के विद्युत उपभोक्ताओं के ऊपर फ्यूल सरचार्ज में वृद्धि करना था तो नियामक आयोग ने इसकी कार्यवाही शुरू कर दी थी। अब जब उपभोक्ताओं की दरों में तीन महीने तक कमी होनी थी तो नियम विरुद्ध तर्क दिया जा रहा है। विद्युत नियामक आयोग की ओर से बनाए गए नियमों के तहत हर तीसरे माह उपभोक्ताओं को लाभ मिलना चाहिए। सवाल यह है कि बिजली दर बढ़ते समय इस नियमावली का ध्यान क्यों नहीं रखा गया? जब अगस्त 2023 में 28 पैसे से लेकर 1.09 रुपये वृद्धि का प्रस्ताव कंपनियों ने दिया था तो उसे वक्त इस नियमावली का ध्यान क्यों नहीं आया?

एक नज़र

शादी, प्यार और घरेलू विवाद में 5079 लोगों की मौत, पशुओं के हमले में 182 ने गंवाई जान

संवाददाता

लखनऊ। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार वर्ष 2021 के मुकाबले 2022 में 2244 आत्महत्या के मामले बढ़े हैं। वहीं, दहेज की वजह से 500 महिलाओं की जान गई। पशुओं के हमले ने भी लोगों की जान ली है। बीते वर्ष शादी, प्यार और घरेलू विवाद की वजह से 5079 लोगों ने अपनी जान दे दी। एनसीआरबी के आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2021 के मुकाबले 2022 में आत्महत्या के 2244 ज्यादा मामले सामने आए। 2021 में जहां 5932 लोगों ने आत्महत्या की तो 2022 में इनकी संख्या 37.8 प्रतिशत बढ़कर 8176 हो गयी। इनमें 5225 पुरुष और 2951 महिलाएं हैं। आंकड़ों पर गौर करें तो बीते वर्ष घरेलू विवाद में 3134, प्रेम संबंधों में 720 और शादी को लेकर हुए विवाद की वजह से 1225 लोगों ने जान दे दी। दहेज की वजह से 500 विवाहिताओं ने और विवाहेतर संबंधों की वजह से 101 लोगों ने आत्महत्या की। परीक्षा में असफल होने पर 122 लोगों ने आत्महत्या कर ली। दिवालिया अथवा बैंकों का कर्ज नहीं चुकाने की वजह से 42, बीमारी से 429, किसी करीबी की मुत्यु होने पर 110, नशे का आदी होने से 118, सामाजिक प्रतिष्ठा खत्म होने पर 58, गरीबी से 77, बेरोजगारी से 151, संपत्ति विवाद से 121, अवैध संबंधों से 76, पेशागत समस्या को लेकर 63 लोगों ने जान दी।

प्रदेश के महानगरों में हुए आत्महत्या के मामले

आगरा- 289
गाजियाबाद- 157
कानपुर- 430
लखनऊ- 361
मेरठ- 34
प्रयागराज- 116
वाराणसी- 163

वरिष्ठ नागरिकों के साथ जघन्य वारदातों में कमी

प्रदेश में वरिष्ठ नागरिकों के साथ होने वाली जघन्य वारदातों में कमी आई है। वर्ष 2020 में 353 वरिष्ठ नागरिकों के साथ अपराध के मामले सामने आए थे, जो वर्ष 2021 में बढ़कर 423 हो गये। हालांकि 2022 में कुल 410 मामले सामने आए। इनमें हत्या के 103, गंभीर रूप से चोट पहुंचाने के 46, बलात्कार का एक, चोरी के 35 और धोखाधड़ी के 106 मामले हुए। बीते वर्ष वरिष्ठ नागरिकों के साथ अपहरण, वसूली, लूट और डकैती का कोई भी प्रकरण सामने नहीं आया। पुलिस द्वारा वरिष्ठ नागरिकों के साथ होने वाले 87.6 प्रतिशत मामलों में अदालत में आरोप पत्र दाखिल किया गया।

पशुओं के हमले में गयी 182 लोगों की जान

उल्लेखनीय है कि बीते वर्ष पशुओं के हमले में प्रदेश में कुल 182 लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। पशुओं के हमले में जान गंवाने के मामले में महाराष्ट्र देश में पहले स्थान पर है, जहां बीते वर्ष 225 मामले सामने आए। इसी तरह ट्रेनों में होने वाली दुर्घटनाओं में 3166 और रेलवे क्रॉसिंग को पार करने के चक्कर में 1340 लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

राम मंदिर का गर्भगृह बनकर तैयार, यहीं विराजमान होंगे रामलला, लाइटिंग-फिटिंग का कार्य पूरा

एजेंसी

लखनऊ। अयोध्या में बन रहे भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर के प्रथम तल का काम लगभग पूरा हो गया है। मंदिर का गर्भगृह भी बनकर लगभग तैयार कर लिया गया है। शनिवार को मंदिर के गर्भगृह की तस्वीरें श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने सोशल मीडिया पर शेयर की। उन्होंने सोशल मीडिया साइट एक्स पर लिखा कि प्रभु श्री रामलला का गर्भ गृह स्थान बनकर लगभग तैयार है। हाल ही में लाइटिंग-फिटिंग का कार्य भी पूर्ण कर लिया गया है। आपके साथ कुछ छायाचित्र साझा कर रहा हूं। अयोध्या में 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है जिसकी तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। दीपोत्सव पर इस तरह नजर आया था राम मंदिर।

यूपी के इस शहर में लगेगा अशोक लीलैंड का प्लांट

10 हजार लोगों को मिलेगा रोजगार, 1500 करोड़ का निवेश

संवाददाता

लखनऊ। अब लखनऊ-कानपुर रोड स्थित स्कूटर इंडिया की जमीन पर प्रदेश का पहला इलेक्ट्रिक बस निर्माण संयंत्र लगेगा। इस पर 1500 करोड़ रुपये निवेश होंगे। अकेले एक संयंत्र से प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष रूप से 10000 रोजगार सृजन होगा। वाणिज्यिक वाहन बनाने वाली दुनिया की चौथी सबसे बड़ी कंपनी अशोक लीलैंड ने प्लांट के लिए लखनऊ को फाइनल कर दिया है। प्रयागराज में भी कंपनी की दिलचस्पी थी लेकिन लखनऊ और कानपुर में पहले से ही आटो मोबाइल की सहायक इकाइयों की मौजूदगी ने इस बेल्ट में प्रदेश के पहले वाहन प्लांट का रास्ता साफ कर दिया। अब लखनऊ-कानपुर रोड स्थित स्कूटर इंडिया की जमीन पर प्रदेश का पहला इलेक्ट्रिक बस निर्माण संयंत्र लगेगा। इस पर 1500 करोड़ रुपये निवेश होंगे। अकेले एक संयंत्र से प्रत्यक्ष- अप्रत्यक्ष रूप से 10000 रोजगार सृजन होगा। 15 सितंबर को अशोक लीलैंड समूह के धीरज हिंदुजा ने यूपी में एकीकृत वाणिज्यिक वाहन बस संयंत्र स्थापित करने को लेकर समझौता किया था। समूह ने लखनऊ स्थित स्कूटर इंडिया और प्रयागराज स्थित बीपीसीएल की जमीन देखी थी। बीपीसीएल की 231 एकड़ जमीन उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) को निशुल्क दी गई। इसे अमृतसर-कोलकाता इंडस्ट्रियल कॉरिडोर परियोजना के तहत दिया गया। यूपीसीडा के पास जमीन आते ही हिंदुजा समूह को जमीन मिलने का रास्ता भी साफ हो गया था। प्रयागराज में जमीन की उपलब्धता और औद्योगिक नीति के मुताबिक सब्सिडी लखनऊ की तुलना में ज्यादा थी। श्रम भी सस्ता था। इस लिहाज से प्रयागराज लखनऊ पर भारी पड़ रहा था। बड़ा उद्योग केवल जमीन और सब्सिडी के सहारे नहीं पनप सकता जबकि तक उसके पास सहायक इकाइयों (एंसीलरी) का मजबूत नेटवर्क न हो। इस कसौटी में लखनऊ से प्रयागराज पिछड़ गया। लखनऊ में टाटा की मौजूदगी पहले से है। इस वजह से यहां 200 से ज्यादा सहायक इकाइयां केवल आटोमोबाइल सेक्टर की हैं। यहां से 70 किलोमीटर दूर कानपुर में 3000 से ज्यादा इकाइयां आटोमोबाइल सेक्टर की इकाइयां हैं। वाहन क्षेत्र की सहायक इकाइयों की अच्छी खासी मौजूदगी के कारण स्कूटर इंडिया की जगह पर मुहर लगा दी गई। अब ये बेल्ट देश के सबसे बड़े इलेक्ट्रिक वाणिज्यिक वाहनों की बेल्ट के रूप में उभरेगी। अशोक लीलैंड यहां ई-मोबिलिटी पर केंद्रित एक एकीकृत वाणिज्यिक वाहन बस संयंत्र स्थापित करेगा जो राज्य में अशोक लीलैंड का पहला संयंत्र होगा। साझेदारी के तहत अशोक लीलैंड मुख्य रूप से इलेक्ट्रिक बसों के उत्पादन पर फोकस करेगा। प्लांट में वर्तमान में उपलब्ध ईंधन के साथ-साथ उभरते वैकल्पिक ईंधन द्वारा संचालित वाहनों को भी असेंबल करने की तकनीक यहां होगी।

बेसिक स्कूलों के शिक्षकों की तबादला नीति पर हाईकोर्ट की मुहर, सभी याचिकाएं निस्तारित

संवाददाता

लखनऊ। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ ने शुक्रवार को एक अहम फैसले में जूनियर बेसिक स्कूलों के शिक्षकों के अंतर जनपदीय तबादला नीति पर मुहर लगा दी। कोर्ट ने कहा कि इस नीति में कोई अवैधानिकता नहीं है। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ ने शुक्रवार को एक अहम फैसले में जूनियर बेसिक स्कूलों के शिक्षकों के अंतर जनपदीय तबादला नीति पर मुहर लगा दी। कोर्ट ने कहा कि इस नीति में कोई अवैधानिकता नहीं है। कोर्ट ने आदेश में बीते 26 जून को जारी तबादला सूची को चुनौती देने वाली सभी याचिकाओं को निस्तारित करते हुए कहा कि न्यायिक समीक्षा के तहत हाईकोर्ट, कार्यपालिका या बेसिक शिक्षा परिषद को कोई खास नीति बनाने का निर्देश नहीं दे सकता है। न्यायमूर्ति ओम प्रकाश शुक्ल की एकल पीठ ने यह फैसला पूजा कुमारी सिंह व अन्य सहायक शिक्षकों की 36 याचिकाओं पर दिया। इनमें बीते 26 जून की तबादला सूची और सरकार की तबादला नीति संबंधी विभिन्न आदेशों को चुनौती दी गई थी। तबादला नीति के ये आदेश बीते 2, 8 व 16 जून को दिए गए थे। कोर्ट ने कहा कि गंभीर बीमारी के आधार पर ट्रांसफर चाहने वाले याची शिक्षकों के मामले परिषद को समुचित निर्णय लेने को वापस भेजे जाते हैं।

इंडिया गठबंधन के भविष्य पर उठ रहे सवालों के बीच जयंत

बोले- हम गठबंधन में हैं, अखिलेश के साथ हैं

संवाददाता

लखनऊ। राष्ट्रीय लोक दल के अध्यक्ष जयंत चौधरी ने कहा है वह विपक्षी दलों के साथ हैं और इंडिया गठबंधन में हैं। अखिलेश यादव के साथ हैं। पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम आने के बाद लोकसभा चुनाव 2024 के लिए बनाए गए विपक्षी गठबंधन इंडिया के भविष्य को लेकर उठाए जा रहे सवालों के बीच राष्ट्रीय लोक दल के अध्यक्ष जयंत चौधरी ने कहा है कि वह इंडिया गठबंधन के साथ हैं और अखिलेश यादव के साथ हैं। कहा कि हम विपक्षी दलों को साथ लेकर चलेंगे। उन्होंने मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि किसानों पर दर्ज किए गए मामले अभी वापस नहीं लिए गए हैं। वहीं, तृणमूल सांसद महुआ मोइत्रा की संसद सदस्यता रद्द किए जाने पर उन्होंने कहा कि यह लोकतंत्र में पहली बार हो रहा है। ये सरकार विरोध करने वालों को जेल में बंद कर देती है और संसद में बोलने वालों की सदस्यता रद्द कर देती है। लोकसभा चुनाव की तैयारियों के लिए लखनऊ पहुंचे हैं जयंत राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम आने के बाद सभी पार्टियां लोकसभा चुनाव की तैयारियों में जोर-शोर से जुट गई हैं। रालोद ने भी चुनावी तैयारियां शुरू कर दी हैं। इस क्रम में शनिवार को राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी जयंत सिंह लखनऊ पहुंचे।

69000 शिक्षक भर्ती अभ्यर्थियों से भी मिलेंगे

जयंत बैठक के बाद ईको गार्डन में नियुक्ति के लिए अनिश्चितकालीन धरना दे रहे 69000 शिक्षक भर्ती अभ्यर्थियों से भी मिलेंगे। पार्टी पूर्व में भी इनका समर्थन कर चुकी है। वहीं इन अभ्यर्थियों का नेतृत्व कर रहे विजय यादव ने कहा कि जल्द उन्हें नियुक्ति नहीं दी गई तो सीएम आवास का घेराव होगा।

शौचालय देने के लिए प्रधान ने ग्रामीणों से वसूला सुविधा शुल्क

संवाददाता

सूरतगंज बाराबंकी। उत्तर प्रदेश की महंत योगी आदित्यनाथ सरकार ग्रामीण क्षेत्रों को स्वच्छ रखने के लिए भले ही गरीबों व पात्रों को घर- घर शौचालय बनवाने के लिए दो किस्तों में कुल बारह हजार रूपए का अनुदान लाभार्थी को निशुल्क दे रही है। लेकिन वहीं दूसरी तरफ बिचौलिए व ग्राम प्रधान इसका नाजायज फायदा उठा कर जनता को चूना लगा रहे हैं। बतादें विकास खंड सूरतगंज की ग्राम पंचायत मसुरिहा के भगवानी पुरवा निवासी पूजा देवी व लल्लाराम सुनील कुमार सहित दर्जनों ग्रामीणों का कहना है उनसे शौचालय का लाभ दिलाने के नाम पर आधार कार्ड बैंक पासबुक की फोटो कॉपी के साथ पांच सौ रुपये सुविधा शुल्क वसूला गया। उन्होंने बताया कि ग्राम प्रधान अमरेश कुमार ने शौचालय बनवाने के लिए प्रति परिवार से पांच पांच सौ रुपये वसूलकर अवैध धन उगाही की है। लेकिन इसके बावजूद भी लिस्ट में उनका नाम नहीं आया। आरोप है कि शौचालय व अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने के नाम पर प्रधान ने ग्रामीणों से अवैध रूप से वसूली कर धोखाधड़ी की है और सपने चहेतो को शौचालय से लेकर आवासों तक का लाभ दिया गया है। लेकिन हम लोगो को अभी तक सरकारी कोई भी लाभ नहीं मिल सका है। ऐसे में ग्रामीणों ने प्रधान के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। बताया जा रहा है कि पंचायत में करीब 40 लोगों से गांव के ग्राम प्रधान द्वारा शौचालय निर्माण के लिए पांच-पांच सौ रुपये वसूले गए हैं। अगर इसकी जांच निष्पक्षता से कराई जाए। तो दूध का दूध और पानी का पानी सामने आ जाएगा। उधर ग्राम प्रधान अमरेश कुमार का कहना है। ग्रामीणों द्वारा लगाए गए सभी आरोप निराधार हैं। हमने कोई धन उगाही नहीं की है।

शिक्षक ही जब शराब पीकर स्कूल जाएंगे, तो वहां क्या पढ़ाएंगे?

शराब के नशे में टल्ली शिक्षक, वीडियो हुई वायरल, बीएसए ने दिए जांच के आदेश

हिमांशु त्रिपाठी (द अचीवर टाइम्स)

हरदोई। जिले में शिक्षा विभाग को शर्मसार करने वाला मामला सामने आया है। दरअसल प्राथमिक विद्यालय के इंचार्ज शराब के नशे में टल्ली होकर स्कूल जाते हैं और विद्यालय में वाद-विवाद करते हैं। शिक्षक के शराब पीकर स्कूल जाने से बच्चे ही नहीं गांव के लोग भी बेहद परेशान हैं। शराबी शिक्षक के अक्सर शराब पीकर स्कूल आने से बच्चों की पढ़ाई बाधित होने के साथ ही विद्यालय का माहौल भी खराब हो रहा है। ऐसे में ग्रामीणों ने शराब के नशे में शिक्षक के वार्तालाप का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल किया है। इस पूरे मामले को लेकर बीएसए ने शराबी शिक्षक के खिलाफ जांच और कार्रवाई के आदेश दिए हैं।

आपको बता दें कि मामला हरदोई जिले के प्राथमिक विद्यालय तरी का है, जहां रोजाना विद्यालय के इंचार्ज प्रशुभ कुमार सिंह शराब के नशे में टल्ली होकर स्कूल पहुंचते हैं। शराबी शिक्षक के स्कूल परिसर में वार्तालाप और हंगामें का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वीडियो में आप साफ तौर ये देख सकते हैं कि किस तरह से शराब के नशे में टल्ली विद्यालय के इंचार्ज प्रशुभ कुमार सिंह अभिभावकों से खुद की तारीफ करने में जुटे हैं। गुरु जी बता रहे हैं कि उनके पास दिमाग है पैसा कमाने का, स्कूल आने से पहले वह रोजाना 1000 से 1500 रुपए कमा लेते हैं और मंडी जाते हैं, तो बकरी बन जाते हैं। एक अभिभावक उनसे सवाल कर रहा है कि गुरु जी आज दूसरे मूड में हैं बच्चे टहल रहे हैं, तो इस पर गुरु जी का जवाब है कि आज नहीं पढ़ाऊंगा। यही नहीं विद्यालय में इस शिक्षक के हंगामा करने पर रसोईया भड़क गई और शराबी शिक्षक को जमकर लताड़ लगाई, जिसके बाद शराबी शिक्षक अपने साथी के साथ स्कूल से भाग निकला। शिक्षा के मंदिर में शिक्षक के रोजाना शराब पीकर आने से गांव के लोगों में काफी रोष है। शराबी शिक्षक की इस करतूत से विद्यालय में बच्चों की पढ़ाई बाधित हो रही है। नशे में टल्ली होकर गुरुजी कभी-कभार पढ़ाते हैं, तो कभी-कभार ज्यादा नशे में उनकी हालत ऐसी हो जाती है कि वह पढ़ाने के लायक ही नहीं रहते। सरकारी स्कूल के शिक्षक की इस करतूत से विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे ही नहीं उनके अभिभावक भी काफी परेशान है।अभिभावक और बच्चे बताते हैं कि विद्यालय के हेड प्रशुभ सिंह रोजाना शराब पीकर विद्यालय आते हैं, जिससे उनकी पढ़ाई बाधित होती है। विद्यालय में सहायक अध्यापिका ही बच्चों को पढ़ाती हैं कई बार तो मिड डे मील भी नहीं बनता है, जिससे बच्चे भूखे रह जाते हैं। ऐसे में ग्रामीणों ने शिक्षा के मंदिर में टल्ली होकर आने वाले गुरु की शर्मनाक हरकत को अपने मोबाइल फोन में कैद कर सोशल मीडिया पर वायरल किया है।वायरल वीडियो को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी विजय प्रताप सिंह ने संज्ञान लिया है और पूरे मामले में जांच और कार्यवाही के आदेश दिए हैं।

सम्पादकीय

कैसे हुआ देश की सबसे बड़ी रियासत का भारत संघ में विलय?

जम्मू-कश्मीर का 26 अक्टूबर 1947 और जूनागढ़ का 20 फरवरी 1948 को भारत में विलय हो गया। लेकिन हैदराबाद रियासत के निजाम ने किसी भी कीमत पर भारत में विलय के प्रस्ताव को नामंजूर करते हुए खुद को स्वतंत्र रहने का एलान कर दिया था। आजाद भारत के लिए न तो भौगोलिक रूप से और न ही सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से यह संभव था कि हैदराबाद देश के बीचो-बीच एक नासूर की तरह बना रहे। 15 अगस्त 1947 को भारत को आजादी तो मिली लेकिन छत-विछत रूप में। अंग्रेजों ने देश का बंटवारा तो कर ही दिया था साथ में 565 देशी रियासतों को हवा में लटकता छोड़ दिया। जिन्हें अंग्रेजों की कूटनीति के चलते भारतीय संघ में शामिल होने या न होने का अधिकार दे दिया गया था। हैदराबाद, जम्मू-कश्मीर और जूनागढ़ रियासतों ने अंग्रेजों के इसी चाल का फायदा उठाते हुए भारत में विलय नहीं कर स्वतंत्र रहने की बात कही। ऐसी प्रतिकूल स्थिति में राष्ट्र की एकता और अखंडता को हर तरह से खतरा था। इस खतरे को देखते हुए ही आजाद भारत के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने तमाम मुश्किलों और चुनौतियों का सामना करते हुए न सिर्फ इन रियासतों का भारत संघ में विलय कर भारत को सुदृढ़ किया बल्कि उसे स्थायित्व भी प्रदान किया। आजाद भारत के एकीकरण की इस प्रक्रिया में सबसे आखिर में हैदराबाद रियासत का विलय हुआ। जो आजादी के एक साल बाद काफी संघर्ष के बाद संभव हुआ और तब कहीं जा कर भारत का एकीकरण पूर्ण हो पाया। इस वर्ष हैदराबाद के भारत में विलय की 75वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है। लेकिन भारत की सबसे बड़ी रियासतों में से एक हैदराबाद के विलय की कहानी जितनी दिलचस्प है, उतनी ही संघर्षपूर्ण।

अंग्रेज जब देश छोड़कर जा रहे थे तब देश में करीब 565 देशी रियासतें मौजूद थी। अंग्रेजों ने इन देशी रियासतों को यह छूट दे दी थी कि वे अपनी मर्जी के मुताबिक भारत या पाकिस्तान, किसी में भी मिल सकते हैं या चाहें तो स्वतंत्र रह सकते हैं। इसके लिए उन्होंने रियासतों को चालीस दिन का समय दिया था। पूरे राष्ट्र का इस तरह छोटे-बड़े खंडों में बंटे रहना आर्थिक-सामाजिक प्रगति में बहुत बड़ी बाधा थी। राजनीतिक शक्ति के मामले में भी एक रियासत दूसरी रियासत से क्षेत्रफल और जनसंख्या आदि में काफी अलग थी। ऐसे में भारत की एकता और अखंडता के लिए इन रियासतों का विलय करना बेहद जरूरी था।

हैदराबाद के निजाम ने विलय प्रस्ताव को कर दिया नामंजूर

हालांकि, 15 अगस्त 1947 तक इन रियासतों में से तीन को छोड़कर बाकी ने भारत में विलय का फैसला किया। लेकिन जम्मू-कश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद रियासतों ने भारत में शामिल न होकर स्वतंत्र मुल्क के रूप में रहने की बात कही। इनमें जम्मू-कश्मीर का 26 अक्टूबर 1947 और जूनागढ़ का 20 फरवरी 1948 को भारत में विलय हो गया। लेकिन हैदराबाद रियासत के निजाम ने किसी भी कीमत पर भारत में विलय के प्रस्ताव को नामंजूर करते हुए खुद को स्वतंत्र रहने का एलान कर दिया। आजाद भारत के लिए न तो भौगोलिक रूप से और न ही सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से यह संभव था कि हैदराबाद देश के बीचो-बीच एक नासूर की तरह बना रहे। सरदार पटेल ने हैदराबाद को 'भारत के पेट में कैंसर' कहा था और आखिरकार 17 सितंबर 1948 को 'पुलिस एक्शन' के तहत एक संघर्ष के बाद हैदराबाद का भारत में विलय करते हुए भारत के एकीकरण को पूरा कर राष्ट्र को स्थायित्व दिया। दरअसल, 15 अगस्त 1947 से पहले भारत में तीन तरह के क्षेत्र थे। एक ब्रिटिश भारत का क्षेत्र जो सीधे गवर्नर जनरल के अधीन था। दूसरा फ्रांस और पुर्तगाल के औपनिवेशिक क्षेत्र, जिनमें चंदननगर, पाण्डिचेरी और गोवा शामिल थे। और तीसरा देशी राज्य, जो सैकड़ों राजे-रजवाड़ों और स्थानीय शासकों के अधीन बंटा हुआ था। जिन्हें प्रिंस्ली स्टेट्स, रियासत, रजवाड़े, देशी रियासत आदि नामों से जाना जाता था। भारत के कुल क्षेत्रफल के 2/5 यानी 40 फीसदी भूमि पर इन रियासतों का कब्जा था और करीब 9 करोड़ जनता इन रियासतों में रहती थी। इन रियासतों के शासक भारतीय जरूर थे लेकिन इन पर पूरी तरह से ब्रिटिश शासन का नियंत्रण था। बदले में इन्हें ब्रिटिश पैरामाउंटसी के तहत अनेक प्रकार की स्वायत्ता प्राप्त थी। यही वजह थी कि रियासतों के शासकों को अपनी प्रजा की कोई परवाह नहीं थी और इन रियासतों में रहने वाली प्रजा की स्थिति काफी दयनीय थी। जब 20 फरवरी 1947 को तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने भारत की स्वतंत्रता का एलान करते हुए कहा कि ÷सम्राट की सरकार पैरामाउंटसी के तहत अपनी शक्तियों और कर्तव्यों को ब्रिटिश भारत के किसी भी सरकार को सौंपने का इरादा नहीं रखती है÷। तब अंग्रेजों की इसी कूटनीति का फायदा उठाते हुए इन रियासतों ने खुद को भारत में विलय नहीं करने की बात कह कर स्वतंत्र रहने की बात कही। इनमें हैदराबाद रियासत तो अंतिम समय तक इस बात के लिए तैयार नहीं हुआ, जब तक कि भारत ने सेना भेजकर उसका विलय नहीं कर लिया। हैदराबाद रियासत के इस नापाक इरादे को मोहम्मद जिन्ना ने भी उसे स्वतंत्र रहने की बात कर काफी उकसाया था।

सबसे बड़े रियासतों में से एक थी हैदराबाद की रियासत

हैदराबाद रियासत आजादी के समय भारत के सबसे बड़े रियासतों में से एक थी। जो 82 हजार वर्ग मील से भी ज्यादा क्षेत्र में फैली हुई थी और उसका क्षेत्रफल इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के कुल क्षेत्रफल से भी अधिक था। जनसंख्या करीब एक करोड़ सत्तर लाख थी। हैदराबाद रियासत में आज का मराठवाड़ा, कर्नाटक के कई इलाके और पूरा तेलंगाना शामिल था। इनमें 28 फीसदी मराठी, 22 फीसदी कन्नड़ और 50 फीसदी लोग तेलुगू भाषी थे। इनमें करीब 21 लाख उर्दू बोलने वाले भी शामिल थे। राज्य की कुल आबादी में करीब 85 फीसदी हिंदू, 12 फीसदी मुसलमान और बाकी ईसाई, जैन और अन्य धर्म के लोग थे। चारों तरफ से जमीन से घिरी यह रियासत आबादी और कुल राष्ट्रीय उत्पादन के लिहाज से भारत का सबसे बड़ा राजघराना था। जो खाद्य, कॉटन, तिलहन, कोयला और सीमेंट उत्पादन में आत्मनिर्भर था। हालांकि पेट्रोल और नमक उसे ब्रिटिश भारत से मंगाना पड़ता था। गुलामी के दिनों में भी हैदराबाद रियासत की अपनी सेना, एयरलाइन, दूरसंचार प्रणाली, रेलवे नेटवर्क, डाक प्रणाली, मुद्रा और रेडियो प्रसारण सेवा थी। निजाम का शहर और मोतियों का शहर के नाम से मशहूर हैदराबाद की स्थापना 1591 में कुतुबशाही वंश के पांचवे शासक मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने मूसी नदी के किनारे किया था। लेकिन हैदराबाद में निजामशाही की शुरुआत 1724 में तब हुई जब दक्कन का मुगल सूबेदार कमर-उद्दीन सिद्दीकी ने मुगल सल्तनत से विद्रोह कर खुद को आजाद घोषित कर दिया और 'आसफ जाह' के खिताब के साथ हैदराबाद पर अधिकार कर एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। दरअसल औरंगजेब के निधन के बाद मुगल शासक मुहम्मद शाह ने मीर कमर-उद्दीन सिद्दीकी को 1713 में 'निज़ाम-उल-मुल्क' के खिताब के साथ दक्कन का सूबेदार नियुक्त किया था। लेकिन वह विद्रोह कर 1724 में हैदराबाद का सुल्तान बन बैठा। बाद में आसफ जाह के उत्तराधिकारियों ने हैदराबाद स्टेट पर राज्य किया और वे निजाम कहलाए। हैदराबाद राज्य के सातवें और आखिरी निजाम मीर उस्मान अली खान थे जो 1911 में हैदराबाद के निजाम बने और 1948 तक सत्ता पर काबिज रहे। हैदराबाद भारत का पहला देशी राज्य था जिसने 1802 में अंग्रेजों के साथ सहायक संधि पर हस्ताक्षर किया। इससे खुश होकर अंग्रेजों ने हैदराबाद के निजाम को 'हिज एग्जॉल्टेड हाईनेस' की उपाधि प्रदान की थी, जबकि अन्य रियासत के शासकों को 'हिज हाईनेस' की उपाधि दी थी। इसी तरह हैदराबाद निजाम के बेटे को प्रिंस ऑफ वेल्स की तरह 'प्रिंस ऑफ बरार' की उपाधि दी थी।

सरदार पटेल और हैदराबाद के निजाम

आजादी के वक्त हैदराबाद का निजाम मीर उस्मान अली खान दुनिया का सबसे अमीर व्यक्ति माना जाता था। तब निजाम की सालाना आय करीब 25 मिलियन डॉलर थी। जो उनके खुद के खर्च के लिए थी। यह राशि निजाम की खुद की रियासत सर्फ-ए-खास, जो पूरे राज्य के क्षेत्रफल का दस फीसदी था, वहां से आती थी। इसके अलावा हर साल उसे राज्य के खजाने से 5 लाख रुपये अलग से मिलता था।

सड़कों पर चढ़कर हर साल चिढ़ाता पानी

शहरों को बचाने के लिए विशेष कदम उठाने पड़ेंगे। 'वेटलैंड कमीशन' का गठन करना होगा। हमें भूमि का मूल चरित्र फिर से हासिल करने की तरफ ध्यान देना चाहिए शहरी बाढ़ भारत में मानसून की एक खासियत बन गई है। इससे हर साल हमारे शहर जूझते हैं। रास्ते नदी बन जाते हैं, रेलवे स्टेशन और बस अड्डे पानी में डूब जाते हैं, संचार बाधित हो जाता है, पड़ोस में जाना भी दूभर हो जाता है और कुछ जगहों पर लोग हफ्तों तक पानी से घिरे रहते हैं। इस अनिश्चित, अत्यधिक और बेमौसम बारिश का कारण जलवायु परिवर्तन माना जा सकता है, जिसका असर महिलाओं, बुजुर्गों, बच्चों और वंचित तबकों पर कहीं ज्यादा होता है। मगर इसके लिए हमारी मूढ़ता भी कम जिम्मेदार नहीं है। पहली मूर्खता, हम किसी जमीन पर यह जाने बिना हरित क्षेत्र का विकास करते हैं कि वहां पूर्व में कृषि की क्या स्थिति थी? उस भूमि को पहले समतल किया जाता है, फिर उसकी पारिस्थितिकी छीन ली जाती है और अंत में उसे अचल संपत्ति बना दिया जाता है। सर्वेक्षण और रिकॉर्ड रखने की प्रक्रियाओं में लगातार रद्दोबदल करने से उसे पहले बंजर भूमि और फिर 'प्राइम रियल एस्टेट' के रूप में ब्रांडिंग करने में मदद मिलती है। आज हमारे पास बेशक उचित कीमत पर ड्रोन से सर्वेक्षण करने की क्षमताएं हैं, पर हमारी पहुंच आधी सदी पहले किए गए भूसंपत्ति सर्वेक्षणों और 1970 के दशक में हवाई जहाज से ली गई तस्वीरों तक सीमित है। कुछ दशक पहले सीमा-चिह्नों के साथ तैयार नक्शे भी आज हमारे पास नहीं हैं। इन सबके बावजूद हम गेटेड सोसायटी, अपार्टमेंट व व्यावसायिक संपत्तियों में इजाफा देखते हैं, जिनको हम लेकव्यू, हिलटॉप जैसे नामों से भी जानते हैं। दूसरी, हमें यह भरोसा हो गया है कि हमारी सभी समस्याओं का समाधान निर्माण व विनिर्माण संबंधी प्रौद्योगिकियां, और तेजी के साथ विस्तार लेती सूचना प्रौद्योगिकी कर सकती है। इसलिए, शहरी योजना पर पुनर्विचार करने के बजाय हम उन प्रौद्योगिकियों की ओर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, जो बाढ़ की भविष्यवाणी कर सकती हैं और जलभराव जल्दी खत्म कर सकती हैं। इनमें से किसी का अब तक उपयोगी नतीजा नहीं निकल सका है। शहरी बाढ़ एक अत्यधिक स्थानीयकृत परिघटना है, जिसकी दशा-दिशा उसी तरह से साल-दर-साल बदलती रहती है, जिस तरह से अचल संपत्ति का ढांचा बदलता रहता है। तीसरी, लोगों की असमान रिहाइश ने अत्यधिक अस्थिर शहरी संरचनाओं को जन्म दिया है, जो मानसून की पहली बारिश में ही दम तोड़ने लगती हैं। जिन लोगों का स्थायी ठौर-ठिकाना नहीं होता, वे संपत्ति में निवेश करने से कतराते हैं। इसी तरह, कई बस्तियां दशकों से खराब दशा में हैं। वहां लोग ऐसी सामग्रियों का उपयोग करते हैं, जो उन्हें नाममात्र की सुरक्षा देती हैं। जैसे, एस्बेस्टस और प्लास्टिक। प्रकृति के कहर के सामने ये चीजें जल्द दम तोड़ देती हैं। चौथी, आपदाओं को लेकर हमारा नजरिया राहत और पुनर्वास पर केंद्रित रहा है। उपयोगी शहरी योजनाओं में बहुत कम निवेश किया गया है। हम किसी सरकार को विश्वसनीय इसी आधार पर मापते हैं कि वह कितनी जल्दी व कुशलता से लोगों को बचाती है और उन तक राहत पहुंचाती है। हमारा पूरा प्रयास बाढ़ की भविष्यवाणी करने वाली तकनीक, पानी निकालने के लिए पंपसेटों और पाइपलाइन पर निर्भर रहता है, जबकि बाढ़ अब बड़े शहरों तक सीमित नहीं हैं, छोटे शहरों में भी इनकी आमद बढ़ी है। जाहिर है, हमें अपने शहरों को बचाने के लिए विशेष कदम उठाने पड़ेंगे। सबसे पहले हमें 'वेटलैंड कमीशन' का गठन करना होगा। हमें भूमि का मूल चरित्र फिर से हासिल करने की तरफ ध्यान लगाना चाहिए। भारत के शहरों में यह रुझान व्यापक तौर पर दिखने लगा है कि तटीय इलाकों या जल के नजदीकी क्षेत्रों को निजी संपत्ति बना लिया जाए। यह काम इस अदूरदर्शी सोच के साथ किया जाता है कि इससे उस इलाके के बेहतर रख-रखाव में मदद मिलेगी। वास्तव में, संपत्ति चाहे सरकार की हो या निजी, उसकी सीमाएं बांध दी जाती है, जबकि जल का स्तर बदलता रहता है। लिहाजा हमें वेटलैंड, यानी आर्द्रभूमि, घास का मैदान और दलदली इलाका बनाकर इसका सम्मान करना चाहिए और संपत्ति व गैर-संपत्ति के रूप में जमीन को बांटकर उसे संरक्षित करना चाहिए। यह काम वेटलैंड कमीशन बनाकर किया जा सकता है। जरूरी यह भी है कि इस आयोग के पास आवश्यक कार्यकारी, राजस्व और न्यायिक शक्तियां हों।

दूसरा कदम है, 'स्पंज सिटी मिशन'। हमें स्थान-आधारित दृष्टिकोण अपनाने की कहीं ज्यादा जरूरत है। शहरों में बाढ़ तब आती है, जब बांध टूट जाते हैं और झीलों अथवा तालाबों से पानी का अत्यधिक बहाव शुरू हो जाता है। बादल फटने और चक्रवात जैसी चरम मौसमी घटनाओं से भी पानी का जमाव हो जाता है। हालांकि, बाढ़ की वजह आमतौर पर स्थानीय बुनियादी ढांचे की विफलता और उस तरह के निर्माण-कार्य हैं, जो पानी को अवशोषित नहीं कर पाते हैं। इसका समाधान 'पड़ोस में प्राकृतिक क्षेत्र' हो सकता है, जिसमें स्थानीय सामुदायिक ज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके लिए हम स्पंज सिटी मिशन को गति दे सकते हैं, जिसका मकसद शहरी क्षेत्र को ऐसा रूप देना है कि वहां बारिश का पानी अवशोषित हो सके और बाढ़ को आने से रोका जा सके।

तीसरा, 'मेट्रोपॉलिटन प्लानिंग कमेटी'। शहरी बाढ़ खुद में कई अधिकार क्षेत्र को समेटे होती है। इसके अधिकतर समाधान इसलिए कारगर नहीं हो पाते, क्योंकि दो क्षेत्राधिकार एक-दूसरे के साथ पर्याप्त संवाद नहीं करते। इससे निपटने का एकमात्र तरीका एक ऐसा संगठन बनाना है, जिसके पास संयोजन से जुड़ी शक्ति हो। कई राज्यों में मुख्यमंत्री कार्यालय ही इस तरह की शक्ति वाला संस्थान बन गया है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसी संस्थागत क्षमताएं महानगरीय या क्षेत्रीय विकास प्राधिकरणों के पास हों। हम चाहें, तो 'मेट्रोपॉलिटन प्लानिंग कमेटी' को एक उपयोगी मंच बना सकते हैं, जिसकी कल्पना 74वें संविधान संशोधन में की गई थी। और अंतिम उपाय है, वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना। हमें विज्ञान पर भरोसा करना होगा, फिर चाहे वह पदार्थों का विज्ञान हो, जलवायु का विज्ञान हो या जीवन का विज्ञान। जलवायु परिवर्तन मानव जीवन के अस्तित्व के लिए चुनौती है। हमें इस पर संजीदगी से ध्यान देना होगा, चाहे इसके लिए अपने तमाम साधनों का ही क्यों न इस्तेमाल करना पड़े।

राष्ट्र को तबाह कर देने वाली एक जिद

यह तय करना काफी मुश्किल है कि तानाशाह किसी मुल्क का सत्यानाश अपनी नीतियों से ज्यादा करते हैं या अपनी जिद से? कोई नीति कब जिद बन जाती है और कोई जिद ही अकेली नीति कब रह जाती है, इसकी थाह पाना भी आसान नहीं होता। इन दिनों उन नीतियों और जिदों की गणना चल रही है, जिनके चलते गोटबाया राजपक्षे ने उस पूरे श्रीलंका को ही दांव पर लगा दिया, जिसके लोगों ने उन्हें भारी समर्थन देकर अपना सिरमौर बनाया था। उनकी इन नीतियों और जिदों की फेहरिस्त हालांकि बहुत लंबी नहीं है, लेकिन फिलहाल हम एक जिद को ले रहे हैं, जिसका नाम है, ऑर्गेनिक यानी जैविक खेती। गोटबाया अगर जैविक खेती की जिद न करते, तब भी वह श्रीलंका को जिस रास्ते पर ले गए थे, उससे इस देश पर भारी आर्थिक संकट टूटने ही थे। ऊंचे पर्वतों और घने जंगलों वाला यह देश पिछले कुछ साल में जिस व्याधि का शिकार हुआ, चिकित्सा की भाषा में उसके लिए एक ही शब्द-समूह हो सकता है, 'मल्टीपल ऑर्गन फेल्योर', यानी जब शरीर के कई अंग काम करना बंद कर देते हैं। इस तरह के मरीज की जो हालत होती है, वही इस समय श्रीलंका की हो गई है। कृषि

इनमें से महज एक अंग है, जिसकी कमर ऑर्गेनिक खेती की जिद ने तोड़ दी। अगर गोटबाया ऐसी जिद नहीं पालते, तो श्रीलंका में भले ही तमाम तरह की परेशानियां खड़ी हो जातीं, लेकिन वहां कम से कम भुखमरी की वैसी नौबत नहीं आती, जैसी फिलहाल आई हुई है। वैसे गोटबाया ने अपने चुनाव घोषणापत्र में वादा किया था कि अगले दस साल में देश को रासायनिक खेती से मुक्त कर दिया जाएगा। इसमें कोई बड़ी बात भी नहीं थी, क्योंकि दुनिया के कई देश इस समय ऐसी ही बात कर रहे हैं। स्विट्जरलैंड ने दावा किया है कि वह 2028 तक पूर्णतः जैविक खेती वाला देश बन जाएगा। मगर तब किसने सोचा था कि गोटबाया दस साल का कोई सिलसिला शुरू करें, उसके पहले ही उनका चुनावी वादा अचानक कहर बनकर टूट पड़ेगा।

गोटबाया ने बड़े गर्व के साथ संयुक्त राष्ट्र महासभा में यह घोषणा की थी कि श्रीलंका जैविक खेती करने वाला दुनिया का पहला देश बन चुका है। खेती से संबंधित सभी रसायनों के आयात पर पूरी तरह से पाबंदी लगा दी गई। अब वहां बाजार में न उर्वरक उपलब्ध थे, न कीटनाशक, न खर-पतवारनाशक, न फंगीसाइड। एक चीज और नदारद थी, बिना इन रसायनों के कैसे खेती होती है, देश के किसान इसे दशकों पहले भूल चुके थे। कृषि वैज्ञानिकों और प्रशासकों को भी नहीं पता था कि इतने बड़े देश का पेट सिर्फ कंपोस्ट के बल पर किस तरह पालना है? इसके पहले कि इन पर सोचा जाता, हर तरफ से जय-जयकार शुरू हो चुकी थी। पर्यावरण के लिए काम करने वाले वे एनजीओ, यानी गैर-सरकारी संगठन तो बल्लियों उछल रहे थे, जिनके लिए जैविक खेती उनकी परम आस्था थी। यह कहा जाने लगा कि गोटबाया ने पूरे देश को जहर से बचा लिया है और अब श्रीलंका के लोग दुनिया की सबसे सेहतमंद आबादी में बदल जाएंगे।

इंग्लैंड के पूर्व ऑलराउंडर केविन पीटरसन ने ईसीबी को लताड़ा, स्टोक्स के संन्यास पर कहा- मैंने ODI छोड़ा तो मुझे टी 20 खेलने से भी किया बैन, क्लासरूम में करता था वीडियो कॉल, छुट्टी के बाद स्कूल में महिलाओं को बुलाकर रंगरेलियां मनाता था शिक्षक, सस्पेंड। हम चाहें, तो इस औचक फैसले की पीछे एक मजबूरी भी देख सकते हैं। कोविड महामारी के कारण पर्यटन का वह धंधा पूरी तरह चौपट हो गया, जो श्रीलंका के लिए विदेशी मुद्रा का सबसे बड़ा जरिया था, और विदेशी मुद्रा बचाने के दबाव में गोटबाया ने रातोंरात यह फैसला कर लिया। तानाशाही में यही होता है, मुश्किलें आसान जिद की ओर ले जाती हैं, समाधान की कठिन राहों की ओर नहीं। तभी पता चला कि श्रीलंका के पास कंपोस्ट उत्पादन की इतनी क्षमता नहीं है कि पूरे देश की खेती चल सके। न ही पर्याप्त जैविक कीटनाशक हैं। मगर वह जिद ही क्या, जो इतनी जल्द टूट जाए! तय हुआ कि जैविक खाद का आयात किया जाएगा। बात विदेशी मुद्रा बचाने से शुरू हुई थी, अब विदेशी मुद्रा का इस्तेमाल कूड़ा आयात करने में हो रहा था। डर था कि इस खाद के साथ कई नई खर-पतवार के बीज और अनजान कीट-पतंगों के अंडे भी आ सकते हैं, लेकिन किसे परवाह थी!

माना जाता है कि वर्तमान व्यावसायिक खेती के मुकाबले जैविक खेती में उत्पादन 25 फीसदी तक कम हो सकता है। यही कारण है कि कई पर्यावरण वैज्ञानिक इसका विरोध करते हैं, क्योंकि इसका अर्थ होगा, लोगों का पेट भरने के लिए अतिरिक्त जगह पर खेती करना, यानी बड़े पैमाने पर जंगलों को काटना। श्रीलंका में तो इसके साथ ही अव्यवस्था भी जुड़ गई और कई फसलों की उपज आधी भी नहीं मिली। इस सबने किसानों की कमर तोड़ दी और जनता को भुखमरी के कगार पर खड़ा कर दिया। इनमें रबर, चाय, दालचीनी, कुनैन और इलायची जैसी वे फसलें भी शामिल थीं, जिनका श्रीलंका निर्यात करता है। जिद ने विदेशी मुद्रा पाने के बाकी रास्ते भी बंद कर दिए। ये ज्यादातर वे फसलें हैं, जिनका उत्पादन अंग्रेजों ने 1803 के बाद यहां बड़े पैमाने पर निर्यात के लिए किया था। इसके लिए जंगल काटे गए थे और लोगों को बागान मजदूर बनने के लिए मजबूर किया गया था। ब्रिटिश सरकार की इन नीतियों ने अपनी मस्त जिंदगी जीने वाले इस द्वीप में जो उथल-पुथल पैदा की, उसकी कहानियां अब औपनिवेशिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। मगर गोटबाया ने जो उथल-पुथल अपने देश को दी, वह उससे कहीं बड़ी थी और उससे कहीं कम समय में ही पूरे देश में फैल गई। यहां यह भी याद रखना जरूरी है कि आज की दुनिया में गोटबाया अकेले जिद्दी नहीं हैं। रूस के व्लादिमीर पुतिन की जिद तो हम देख ही रहे हैं। एक वह भी जिद है, जिसने ब्रिटेन को यूरोपीय संघ से अलग करके ही दम लिया। एक वह भी जिद थी, जब डोनाल्ड ट्रंप मलेरिया की दवा से ही कोविड का इलाज करने पर तुल गए थे। ऐसी कुछ जिद हमारे आसपास भी दिख जाएंगी। मगर एक फर्क भी है। अमेरिका के वैज्ञानिक संस्थानों की स्वायत्तता के सामने ट्रंप की जिद ज्यादा टिक नहीं सकी। मगर यह श्रीलंका जैसे देशों में नहीं हो सकता। वहां ऐसी संस्थाएं थीं ही नहीं, जो गोटबाया की जिद के सामने खड़े होने का साहस कर पातीं। अगर सचमुच की स्वायत्त लोकतांत्रिक संस्थाएं वहां होतीं, तो शायद श्रीलंका की हथेली पर गोटबाया जैसी तानाशाही की भाग्यरेखा कभी बनती ही नहीं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

गॉड पार्टिकल का रहस्य और हमारे अस्तित्व की कहानी

आखिर इस सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ? इस यूनिवर्स की अद्भुत इंजीनियरिंग के पीछे किसका हाथ है? क्या इस जगत का कोई निर्माता है? या ये ब्रह्मांड रेंडमली कुछ नहीं से सब कुछ बना? ये सवाल आज भी रहस्य हैं। आखिर इस सृष्टि का निर्माण कैसे हुआ? इस यूनिवर्स की अद्भुत इंजीनियरिंग के पीछे किसका हाथ है? क्या इस जगत का कोई निर्माता है? या ये ब्रह्मांड रेंडमली कुछ नहीं से सब कुछ बना? ये सवाल आज भी रहस्य हैं। वहीं ज्यों-ज्यों इंसान की समझ बढ़ती जा रही है। वह कुदरत की इस अद्भुत बनावट के पीछे के रहस्य को खंगालता जा रहा है। बिग-बैंग थ्योरी के अनुसार 13.8 बिलियन साल पहले हमारा यह ब्रह्मांड एक छोटे से एटम जितने बिंदू में कैद था। अचानक हुए एक महाविस्फोट के बाद ये जगत अस्तित्वमान हुआ। बिग-बैंग के बाद पूरे यूनिवर्स में केवल ऊर्जा थी शुद्ध ऊर्जा। समय के साथ-साथ अचानक ये ऊर्जा पदार्थ में बदलने लगी। इसी के चलते स्टार, प्लेनेट, नेबूला, गैलेक्सीज का निर्माण होने लगा। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर अचानक बिग-बैंग के बाद की शुद्ध ऊर्जा कैसे अपने आप को मैटर के रूप में बदलने लगी? इसके पीछे का कारण क्या था? यहीं पर जन्म होता है हिग्स बोसोन (God Particle) और हिग्स फील्ड का। हमारे इस खूबसूरत ब्रह्मांड के पीछे हिग्स फील्ड की इंजीनियरिंग ही काम कर रही है। हिग्स फील्ड के कारण ही बिग-बैंग के बाद जन्मी शुद्ध ऊर्जा पदार्थ (Matter) बन पाई। आज हमारे अस्तित्व के पीछे की वजह हिग्स फील्ड ही है।

क्या है गॉड पार्टिकल

बिग बैंग के बाद जब ब्रह्मांड धीरे-धीरे ठंडा होने लगा। उस दौरान अचानक हिग्स फील्ड अस्तित्व में आ गई। मानो कुदरत ने किसी बड़े मैकेनिज्म के एक लीवर को खींच दिया हो, जिसके चलते हिग्स फील्ड हमारे यूनिवर्स में काम करने लगी। हिग्स फील्ड आने के बाद भार रहित (Mass Less) यानी लाइट की स्पीड से चलने वाले कुछ पार्टिकल्स इस फील्ड से इंटरैक्ट करने लगे। इस इंटरेक्शन के कारण उनमें भार (Mass) आने लगा। वहीं फोटोन जैसे कुछ पार्टिकल्स अभी भी हिग्स फील्ड के साथ इंटरैक्ट नहीं कर रहे थे। वे अभी भी एनर्जी के बंडल ही थे। हिग्स फील्ड के साथ इंटरेक्शन से बड़े पैमाने पर ब्रह्मांड में मैटर बनने लगे। बाद में आगे चलकर इन्हीं पदार्थों से ग्रहों, तारों, निहारिकाएं आदि का निर्माण हुआ। अगर उस समय हिग्स फील्ड अस्तित्व में न आई होती, तो इस जगत में किसी पार्टिकल्स में मास नहीं होता। मास न होने के कारण वे सभी लाइट की स्पीड पर गति कर रहे होते। ऐसे में न पदार्थ का निर्माण होता और न ही तारे या आकाशगंगाएं होतीं। ऐसा कहें कि आज हमारे होने के पीछ हिग्स फील्ड का बहुत बड़ा हाथ है। अगर हिग्स फील्ड न होती, तो इस ब्रह्मांड का स्वरूप ही कुछ और होता। जेनेवा के सर्न में वैज्ञानिक गॉड पार्टिकल की खोज में ठीक उन्हीं परिस्थितियों को पैदा कर रहे हैं, जिस समय ब्रह्मांड बिग-बैंग के बाद ठंडा हुआ था और ऊर्जा के कुछ पार्टिकल्स में हिग्स फील्ड के साथ इंटरैक्ट करने के बाद भार आ रहा था। इसी गुत्थी को सुलझाने के लिए वैज्ञानिकों ने एक खास मशीन बनाई जिसका नाम द लार्ज हेड्रोन कोलाइडर है। वैज्ञानिकों का मानना था कि अगर प्रोटोन जैसे चार्ज्ड पार्टिकल्स को भारी ऊर्जा के साथ टकराया जाए, तो इनके टाकराने से हिग्स फिल्ड में हलचल पैदा होगी। इस हलचल में जन्म लेगा हिग्स बोसोन(God Particle)।

कैसे पड़ा हिग्स बोसोन का नाम द गॉड पार्टिकल

साल 2012 में जेनेवा के ष्टश्वक्रहृ में 27 किलोमीटर लंबी मशीन द लार्ज हेड्रोन कोलाइडर में प्रोटोन के पार्टिकल्स को प्रकाश की 99.99 प्रतिशत गति के साथ टकराया गया। इस टक्कर में जबरदस्त मात्रा में ऊर्जा निकली। इसी दौरान वैज्ञानिकों को पहली बार हिग्स बोसोन के बारे में पता चला। इस एक्सपेरिमेंट ने हिग्स फील्ड के सिद्धांत को प्रमाणित कर दिया। हिग्स फील्ड के सिद्धांत को साल 1964 में पीटर हिग्स ने दिया था। इस थ्योरी के सच साबित होने के बाद साल 2013 में पीटर हिग्स को भौतिकीशास्त्र के नोबेल पुरुस्कार से सम्मानित किया गया।

हिग्स बोसोन और हिग्स फील्ड में अंतर

हमारे इस ब्रह्मांड में चार फंडामेंटल फोर्स हैं। इनमें इलेक्ट्रोमैग्नेटिज्म, स्ट्रॉन्ग न्यूक्लिअर, वीक न्यूक्लिअर और ग्रैविटी शामिल हैं। इन सभी फोर्सेस के कैरियर होते हैं, जैसे इलेक्ट्रोमैग्नेटिज्म का फोटोन, वीक न्यूक्लिअर का ङ्ख और ˆ बोसोन्स, स्ट्रॉन्ग न्यूक्लिअर का ग्लूओन, ग्रैविटी का ग्रैविटोन। ठीक उसी तरह हिग्स फील्ड का कैरियर हिग्स बोसोन होता है।

हिग्स बोसोन का नाम गॉड पार्टिकल पड़ने के पीछे एक बेहद ही दिलचस्प कहानी छिपी है। बात 90 के दशक की शुरुआत की है। फिजिसिस्ट लियोन लैडरमैन ने हिग्स बोसोन और हिग्स फील्ड से जुड़े विषय पर अपनी एक किताब लिखने वाले थे। लियोन अपनी इस किताब का नाम द गॉड डैम्न पार्टिकल The God Damn Particle रखना चाहते थे। हालांकि, उनके पब्लिशर को पुस्तक का ये अजीबोगरीब नाम पसंद नहीं आ रहा था। ऐसे में प्रकाशक ने पुस्तक के नाम से Damn शब्द को हटाकर The God Particle रख दिया। हालांकि, इस नाम के पीछे कोई तर्क नहीं छिपा था बस ये पढ़ने में अच्छा लग रहा है। वहीं किताब पब्लिश होने के बाद मीडिया ने इस नाम को काफी लोकप्रिय कर दिया। ऐसे में हिग्स बोसोन की जगह लोग उसे गॉड पार्टिकल के नाम से जानने लगे।

कार सवार उठा ले गये गैंगस्टर को, विरोध किया तो महिला से बोले मार दूंगा गोली

महिला का कहना है एसओजी थी,कही एनकाउंटर न कर दे पुलिस आसपास थानों में भी नही है जानकारी

❖ शाहजहांपुर एसपी ने कहा कि जानकारी के मुताबिक नोयडा पुलिस ले गयी है,आगे की जानकारी जुटाई जा रही है।

द अचीवर टाइम्स दीपक सिंह

शाहजहांपुर। यूपी के शाहजहांपुर में पुलिस विभाग में उस समय हड़कंप मच गया जब दिनदहाड़े एक गैंगस्टर को आधुनिक असलहों से लैस कार सवारो ने बीच रोड से उठा लिया और फरार हो गए।यही नही गैंगस्टर के साथ एक अन्य व्यक्ति को भी कार सवार अपने साथ ले गए।रोती चीखती महिला ने जब थाना पहुचकर जानकारी दी तो पुलिस के भी होश फ़ाख्ता हो गए।पहले महिला का कहना था कि एसओजी ने उसके पति को उठाया है।लेकिन जब एसओजी से जानकारी की गई तो उसने मामले में अनिभिज्ञता जताई।इसके बाद बात आला अधिकारियों तक पहुँची तो आसपास के थाना पुलिस से जानकारी ली गयी।लेकिन सभी ने इस मामले से इनकार कर दिया।थक हार कर आज महिला अपने सहयोगियों के साथ कलेक्ट्रेट में धरने पर बैठ गयी। दरअसल पूरा मामला शाहजहांपुर की कोतवाली सदर बाजार क्षेत्र का है जहाँ महमंद जलालनगर की रहने वाली राजकुमारी ने बताया कि बुधवार की दोपहर वह अपने पति कल्लू उर्फ धर्मवीर व भाई के साथ जजी कचहरी से तारीख लेकर बाईक से वापस घर जा रही थी।कि अचानक एक कार बाईक के सामने आकर रुकी और कुछ लोगो ने उसके पति व भाई को गाड़ी में बिठा लिया विरोध करने पर कार सवारों ने गोली मारने की धमकी दी और बाईक भी अपने साथ ले गए।महिला ने बताया कि उसे एसओजी ले गयी हैं।इधर दो दिन बीत गए लेकिन पुलिस यह पता नही लगा पायी की आखिर कौन लोग कल्लू व उसके साले को ले गए हैं। आपको बता दें कि कल्लू उर्फ धर्मवीर पर करीब 18 आपराधिक मुकदमें दर्ज है और गैंगस्टर भी है।ऐसे में बुधवार को वह अपनी पत्नी के साथ कोर्ट में तारीख पर आया था।उधर महिला ने अपने पति के एनकाउंटर की आशंका व्यक्त की है और उसकी जानकारी की मांग की है कि आखिर वो है कहां।तो वहीं इस मामले में पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीना ने बताया कि जानकारी हुई है कि नोयडा पुलिस उसे ले गयी है अब मामला क्या है जानकारी जुटाई जा रही है।

लोक अदालत में निपटे 2,19,714 वाद

बाराबंकी। विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान व जिला जज रवींद्र नाथ दुबे की अध्यक्षता में दीवानी न्यायालय परिसर में शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत लगी। इस दौरान 2,19,714 मामलों का निस्तारण कर 22,37,23,706 अर्थदंड एवं प्रतिकर जमा कराया गया। प्री-लेटिगेशन स्तर पर राजस्व विभाग, बैंकों, विभिन्न विभागों के 207700 मामलों का निस्तारण करते हुए 16,66, 70683 रुपये धनराशि जमा कराई गई। जिला जज ने दो वाद का निस्तारण किया गया। प्रधान न्यायाधीश पारिवारिक न्यायालय दुर्ग नारायण सिंह ने 33 मामलों का निस्तारण किया। मोटर दुर्घटना प्रतिकर के कुल 37 वादों का निस्तारण करते हुए 27560803 रुपये प्रतिकर जमा कराया गया। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश प्रथम द्वारा एक वाद, विशेष न्यायाधीश एससीएसटी एक्ट द्वारा तीन वाद, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश कोर्ट संख्या दो के द्वारा पांच वाद, विशेष न्यायाधीश ईसी एक्ट द्वारा 100 वाद, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश कोर्ट संख्या नौ के द्वारा एक वाद।

मिशन 2024 को लेकर ऑल इंडिया हिंदुस्तान कांग्रेस पार्टी ने 19 लोकसभा सीटों पर प्रभारी किए नियुक्त

❖ गढ़ अमरोहा लोकसभा क्षेत्र का प्रभारी बनने पर पं.गोपाल शर्मा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष को मिठाई खिलाकर किया आभार।

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। ऑल इंडिया हिंदुस्तान कांग्रेस पार्टी उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष पंडित गोपाल शर्मा को यूपी की गढ़ अमरोहा लोक सभा क्षेत्र का प्रभारी नियुक्त किया गया है, प्रभारी नियुक्त होने पर पंडित गोपाल शर्मा ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष को मिठाई खिलाकर अपनी खुशी जाहिर की, किया आभार, प्रदेश अध्यक्ष पंडित गोपाल शर्मा एक अनुभवी एव लोकप्रिय नेता हैं, पंडित गोपाल शर्मा पूर्व में लोकदल पार्टी व पीस पार्टी में भी अपनी एक अहम भूमिका निभाने में सक्षम रहे हैं, ऑल इंडिया हिंदुस्तान कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित बुद्ध प्रकाश शर्मा द्वारा यूपी में हापुड़ मेरठ लोकसभा क्षेत्र से पंडित आशीष शर्मा, बिजनौर लोकसभा क्षेत्र से श्रीं गुलशन सिंह, गौतम बुद्धनगर लोकसभा क्षेत्र से पंडित अशोक शर्मा, आंवला लोकसभा क्षेत्र से पंडित जितेंद्र चतुर्वेदी, घोसी लोक सभा क्षेत्र से फेजअलम नियुक्त किए गए, ऑल इंडिया हिंदुस्तान कांग्रेस पार्टी उत्तर प्रदेश के पार्टी पदाधिकारियों ने प्रदेश अध्यक्ष पंडित गोपाल शर्मा सहित सभी प्रभारियों को बधाई देते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित बुद्ध प्रकाश शर्मा का आभार व्यक्त किया है, बधाई देने वालों में पंडित सोमदत्त शर्मा, पंडित रवि कांत शर्मा, अब्दुला सैफी पश्चिम उत्तर प्रदेश महासचिव, प्रदेश मीडिया प्रभारी पंडित लोकेश शर्मा, प्रदेश सचिव पिंटू शर्मा, जिला अध्यक्ष मेरठ पंडित कुलदीप शर्मा, पंडित अजय शर्मा जिला अध्यक्ष हापुड़, पंडित संजय शर्मा अमरोहा, पंडित हरिदत्त शर्मा, पंडित नरेन्द्र शर्मा जिला अध्यक्ष किसान प्रकोष्ठ हापुड़, पंडित सुनील शर्मा जिला अध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ हापुड़, महताब आलम जिला अध्यक्ष हापुड़ अल्प संख्यक प्रकोष्ठ, महंत एन.के.त्रिपाठी गढ़ जिला महासचिव, पंडित गौरव शर्मा, राकेश त्यागी, पंडित प्रदीप शर्मा अध्यक्ष गढ़, आबिद सैफी गढ़ विधानसभा अध्यक्ष, महिपाल सागर महासचिव गढ़, बबलू प्रजापति, प्रताप कोरी आदि लोग रहे।

एक नज़र

डीएपी की किल्लत व बड़े दामो को लेकर कांग्रेस के सौंपा ज्ञापन

द अचीवर टाइम्स दीपक सिंह

शाहजहांपुर। उत्तर प्रदेश कांग्रेस के आह्वान पर डीएपी की किल्लत और दामों में भारी वृद्धि के विरोध में जिला कांग्रेस कमेटी शाहजहांपुर की तरफ से एक ज्ञापन महानगर अध्यक्ष पवन कुमार सिंह ने महामहिम राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा। इस अवसर पर प्रदेश सचिव अनूप वर्मा,पीसीसी सदस्य कृष्ण विनोद मिश्र, प्रवीन वर्मा,महिला कांग्रेस नेत्री नेहा पाण्डेय,अल्पसंख्यक कांग्रेस के अध्यक्ष सईद अंसारी,सौरभ पाण्डेय,रामजी अवस्थी अनस इकबाल,अदीब अहमद सहित कई कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पंचायत सदस्य क्षेत्रों की समस्याओं का निस्तारण प्राथमिकता पर करायें: नितिन अग्रवाल

विकास आदि कार्यो में रूचि लेकर निर्धारित समय में गुणवत्ता परक पूर्ण करायें:- प्रेमावती

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। जिला पंचायत सभागार में जिला पंचायत कार्यो की समीक्षा बैठक जिला पंचायत अध्यक्ष प्रेमावती की अध्यक्षता में आहूत की गयी। बैठक में सदस्यों ने अपने क्षेत्र पंचायतों में विद्युत, आंगनबाड़ी केन्द्र, मनरेगा आदि समस्याओं के बारे में जिला पंचायत अध्यक्ष को आवेदन दियें। जिला पंचायत सदस्यों की समस्याओं पर मंत्री आबकारी एवं मद्य निषेध नितिन अग्रवाल ने सम्बन्धित विभाग के अधिकारियो को निर्देश दिये मा0 सदस्यों के क्षेत्रों की समस्याओं का निस्तारण प्राथमिकता पर करायें।

कांग्रेस जनों ने मनाया सोनिया गांधी का 77 वाँ जन्मदिन पर किया रक्तदान.

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

हापुड़। में शनिवार को हापुड़ के कांग्रेस जनों ने पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी का 77 वाँ जन्मदिन मनाया। इस दौरान सोनिया गांधी के जन्मदिन पर कांग्रेस जनों ने देवनंदिनी अस्पताल में रक्तदान किया और उन्हें जन्मदिन की शभकामनाएं भेंट की। *शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अभिषेक गोयल ने कहा कि आज हमारी नेता सोनिया गांधी का जन्मदिन हैं। उन्होंने कहा कि सोनिया गांधी जी एक भारतीय राजनीतिज्ञ हैं। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस , एक सामाजिक लोकतांत्रिक राजनीतिक दल, की सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाली अध्यक्ष हैं , जिन्होंने स्वतंत्रता के बाद के अधिकांश इतिहास में भारत पर शासन किया है। उन्होंने भारत के पूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी की हत्या के सात साल बाद 1998 में पार्टी नेता के रूप में पदभार संभाला और बाईस वर्षों तक सेवा करने के बाद 2017 तक इस पद पर रहीं। रक्तदान करने वालो में वरिष्ठ कांग्रेसी/पीसीसी सदस्य अरविन्द शर्मा, ब्लॉक अध्यक्ष जकारिया मनसबी, विक्की शर्मा, गौरव गर्ग, जोगेंद्र तोमर, भरतलाल शर्मा , सीमा शर्मा, जितेंद्र अग्रवाल, अंकुर अग्रवाल, वाई के शर्मा, हसन आतिफ, यशपाल ढिलौर, देवेंद्र कुमार, सुबोध शास्त्री आदि लोग मौजूद रहे.!

एकमुश्त समाधान योजना से मिली राहत

लेकिन कनेक्शन काटने की कार्यवाही से लोग परेशान

जैदपुर बाराबंकी। एक तरफ सरकार द्वारा चलाई जा रही एकमुश्त समाधान योजना से, जहां बिजली उपभोक्ताओं को थोड़ी सी राहत मिली है, तो वहीं दूसरी तरफ, बकायेदारों का कनेक्शन काटने की प्रक्रिया भी जोरों पर है। विशेष सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, विद्युत उपकेंद्र ज़ैदपुर में बकायेदारों के बिजली कनेक्शन काटने की प्रक्रिया उस समय जोरों पर है, जब उत्तर प्रदेश के ऊर्जा मंत्री, ए के शर्मा का ट्वीट वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। आप को बता दें कि, यह वीडियो हाल ही में हुए विधानसभा सत्र का है, जोकि ट्विटर पर, ऊर्जा मंत्री ए के शर्मा के ट्विटर अकाउंट से, 4 दिसम्बर को लगभग रात 10 बजे शेयर किया गया था। जिस में ऊर्जा मंत्री, ए के शर्मा द्वारा कहा गया है कि, सिर्फ बिल बकाया होने की स्थिति में उपभोक्ताओं का कनेक्शन काटने से हमने बिजली विभाग को मना कर दिया है, साथ ही फोन घुमाओ अभियान के तहत, हम लोग बिल जमा कराने के लिए लोगों को प्रोत्साहित भी कर रहे हैं। अब सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, 5 दिसम्बर को ज़ैदपुर के रईस कटरा, शाह कटरा, और अली अकबर कटरा सहित, अलग अलग वार्डों में लगभग 7-8 उपभोक्ताओं के बिजली कनेक्शन, बकाया के चलते काट दिए गए।

धान के अवैध परिवहन में लिप्त ट्रक से 44 हजार से अधिक की दाण्डिक मंडी शुल्क की हुई वसूली

द अचीवर टाइम्स पप्पू उपाध्याय

कटनी। खबर मध्य प्रदेश के कटनी से कटनी (9 दिसंबर) -उच्च जिले में दलालों, व्यापारियों और बिचौलियों द्वारा अवैध रूप से परिवहन कर जिले में समर्थन मूल्य पर बिक्री करने की चेष्टा करने वाले तत्वों पर कड़ी नजर रखी जा रही है।कलेक्टर अवि प्रसाद के निर्देश के बाद जिले के नाकों में भी कृषि उपज मंडी के उड़नदस्ता दल को बैठाकर वाहनों की सघन जांच की जा रही है। कलेक्टर के निर्देश पर वाहनों से धान,आदि का जिले में बाहरी व्यापारियों द्वारा अवैध परिवहन करने वाले वाहनों पर सख्त निगरानी रखी जा रही है। इसी क्रम में अवैध परिवहन करते हुए एक ट्रक से 43 हजार 321 रुपए की दाण्डिक मंडी शुल्क की राशि वसूली गई। धान का अवैध परिवहन करते वाहन क्रमांक यूपी 70 ई टी 9931 के विरूद्ध कार्यवाही की गई। इस वाहन से 302 क्विंटल धान का अवैध परिवहन किया जाना पाया गया। वाहन पर कार्रवाई कर दांण्डिक मंडी शुल्क वसूल कर राशि जमा करायी गयी। इस कार्यवाही में जांच दल के रूप में कृषि उपज मंडी के सहायक उपनिरीक्षक प्रेम कुमार मांझी, राजेन्द्र कुमार चौधरी, किशोर कुमार पनिका, अमित कुमार केशरवानी और हरिमोहन कौरव शामिल रहे।

बंद मकान को चोरों ने बनाया निशाना जांच में जुटी पुलिस

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

बिलग्राम (हरदोई)। कस्बा के मोहल्ला मैदानपुरा निवासी विमला गुप्ता पत्नी सूरज प्रसाद गुप्ता ने शनिवार को बिलग्राम कोतवाली में प्रार्थना पत्र देकर बताया है कि बीती रात दिनांक 8/12/2023 को हमारे घर में चोरी हो गई।सूचना पर महिला घर पहुंची तो उसने देखा कि घर के मुख्य द्वार के ताले टूटे पड़े थे घर के अन्दर के कमरों के भी ताले टूटे पड़े थे। सारा सामान बिखरा पड़ा हुआ।कमरों में रखी सेफ, बक्से व असमारी के भी ताले टूटे पड़े थे। देखने पर पता चला कि सोने , चांदी के जेवर के डब्बे खाली पड़े थे। उनका सामान गायब था।अलमारी सेफ में में रखी नकदी भी गायब थी है।चोरी के विषय में महिला द्वारा 2 अंगूठी सोने की ,2 चैन सोने की जाने, 1 जोडी पायल चादी की, घर मे रखे पानी की बोतलों के गत्ते से एक पानी की बोतल व रू 35000 नगद राशि गायब है।पीड़िता द्वारा चोरी की सूचना पर पुलिस ने बताया कि जांच की जा रही है।

वाहनों की टक्कर से दो लोगों की मौत

बाराबंकी। अलग-अलग स्थानों पर हुए सड़क हादसों में महिला समेत दो लोगों की मौत हो गई, जबकि चार घायल हो गए। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए हैं। सफदरगंज थाना क्षेत्र के प्यारेपुर सरैया गांव निवासी रामसरन (60) शनिवार को साइकिल से सफदरगंज स्थित बैंक जाने के लिए निकले थे। इसी दौरान लखनऊ अयोध्या नेशनल हाईवे पर सफदरगंज से पहले पारिजातपुरम के निकट कानपुर से अयोध्या की ओर बरातियों को लेकर जा रही तेज रफ्तार बस ने वृद्ध की साइकिल में पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर लगने के बाद वृद्ध साइकिल समेत बस में फंस गया और करीब 100 मीटर तक घिसटता चला गया। वृद्ध की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने बस को चालक समेत कब्जे में ले लिया।

थाना दिवस पर जिलाधिकारी ने सुनीं लोगों की समस्याएं

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने पुलिस अधीक्षक आलोक प्रियदर्शी के साथ कोतवाली जगतपुर में थाना दिवस के अवसर पर लोगों की समस्याएं सुनीं। उन्होंने पुलिस टीम को निर्देश देते हुए कहा कि जनता की समस्याओं को जल्द से जल्द निस्तारित किया जाए। महिलाओं और बच्चों से जुड़े मामलो में शीघ्र कार्यवाही की जाए। जिससे लोगों को समय पर न्याय मिल सके। राजस्व विभाग को निर्देशित करते हुए उन्होंने कहा कि जमीनी विवाद से संबंधित मामलों में दोनों पक्षों की बातें सुनने के उपरांत ही समस्या का निपटारा किया जाए। इसके लिए पुलिस और राजस्व विभाग की टीम मिलकर समस्याओं को देखे और उसका निपटारा कराए। थाना दिवस के इस अवसर पर राजस्व और पुलिस विभाग के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सांस्कृतिक वैभव बिखेरने को तैयार महादेवा

महादेवा (बाराबंकी)। श्री लोधेश्वर महादेवा में अगहनी मेले के साथ ही सोमवार से महादेवा महोत्सव का आगाज होगा। इसी दिन से महोत्सव के सांस्कृतिक मंच पर एक से बढ़कर एक नामचीन कलाकार अपनी प्रस्तुति देंगे। सांस्कृतिक वैभव बिखेरने के लिए महादेवा में तैयारियां पूरी हो गई हैं। डीएम सत्येन्द्र कुमार 11 दिसंबर को मंत्रोचारण के बीच फीता काट कर महादेवा महोत्सव का शुभारंभ करेंगे। एसडीएम नागेन्द्र पांडेय ने शनिवार को महोत्सव की तैयारियों का जायजा लिया। एसडीएम ने बताया कि इस बार महादेवा महोत्सव शिवोहम थीम पर आधारित होगा। 11 से 17 दिसंबर तक चलने वाले महोत्सव की तैयारियां लगभग पूरी कर ली गई हैं। महोत्सव के सांस्कृतिक मंच को भगवान शिव के स्वरूपों के साथ सजाया जा रहा है।

डीएम ने खिलाड़ियों को खेल भावना का सम्मान करने की शपथ दिलायी

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने बाल विद्या भवन में स्पोर्ट्स एक्स्ट्रावैगेंजा के समापन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित व सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उदघाटन किया। प्रबन्ध निदेशिका कीर्ति सिंह व प्रधानाचार्य कनुप्रिया सिंह ने जिलाधिकारी का पुष्प गुच्छ व स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया।कार्यक्रम में बच्चों ने गणेश वंदना व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इसके उपरांत मुख्य अतिथि द्वारा झंडा फहराया गया। तत्पश्चात जिलाधिकारी ने लैम्प जलाकर स्पोर्ट्स एक्स्ट्रा वैगेंजा का उदघाटन किया तथा खिलाड़ियों को खेल भावना का सम्मान करने की शपथ दिलायी गयी। सारे जहाँ से अच्छा गाने की धुन पर मार्च पास्ट ने सभी का मन मोह लिया। मैं निकला गड्डी लेके गीत पर छोटी-छोटी बच्चियों के नृत्य ने सभी का मन मोह लिया। जिलाधिकारी ने 25 नवंबर से 4 दिसंबर तक आयोजित राकेश विक्रम सिंह टूर्नामेंट के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किया। जिलाधिकारी ने अपने सम्बोधन में बच्चों की प्रतिभा की सराहना की। इस अवसर पर विद्यालय की प्रबंध निदेशक कीर्ति सिंह, प्रधानाचार्य कनुप्रिया सिंह, बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष त्रिलोकी सिंह, विद्यालय के शिक्षकगण आदि उपस्थित रहे।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ खिरनीबाग रामलीला मैदान से किया गया महानगर वासियों द्वारा सक्रिय रूप से किया गया प्रतिभाग

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहांपुर। भारत सरकार व उ0प्र0 सरकार द्वारा संचालित सरकारी योजनाओं से सम्बंधित विभागों द्वारा लगाए गए कैम्प।

हजारों की संख्याओं में लोगो द्वारा किया गया प्रतिभाग। नगर निगम, शाहजहांपुर के तत्वावधान में विकसित भारत संकल्प यात्रा को सफल बनाने हेतु नगर क्षेत्र के चयनित स्थल खिरनीबाग रामलीला मैदान में शासन द्वारा उपलब्ध कराई गई वैन वाहन के माध्यम से आज दोपहर 12:30 बजे मा0 प्रधानमंत्री जी के उदबोधन से शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री जी द्वारा देश स्तर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाले सरकारी योजनाओं से लाभान्वित लाभार्थियों से संवाद किया गया तथा सरकारी योजनाओं के प्राप्त करने के बाद उनके जीवन में हुए बदलाव पर वार्ता की गई। प्रधानमंत्री जी द्वारा सभी लाभार्थियों को शुभकामनाएं दी गयी और आत्मनिर्भर बनने की भी अपील की गई। प्रधानमंत्री जी द्वारा जन-मानस की सुविधा हेतु भारत सरकार व उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित विभिन्न प्रकार की योजनायें जैसे- पी0एम0 स्वनिधि योजना, स्वच्छ भारत मिशन (नगरीय) योजना, पीएम आवास योजना (शहरी), अमृत मिशन 2.0 योजना, मेरी कहानी मेरी जुबानी, स्मार्ट सिटी मिशन योजना, पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएम उज्जवला योजना, पीएम मुद्रा योजना, स्टार्टअप योजना, स्टैंडअप इंडिया योजना, आयुष्मान भारत योजना, पीएम ई-बस सेवा योजना, पीएम भारतीय जन औषधि परियोजना, पीएम सौभाग्य योजना के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की योजनाओं के सम्बंध में अवगत कराया गया और इन योजनाओं से जुड़ने की अपील की गई। प्रधानमंत्री द्वारा मोदी की गारंटी वाली गाड़ी में अधिक से अधिक प्रतिभाग करने की अपील भी की गई। साथ ही वविकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत भारत को एक नई दिशा में ले जाने के लिए अनुरोध किया गया। इसके उपरांत महापौर अर्चना वर्मा द्वारा सभी को हमारा संकल्प विकसित भारत के प्रति शपथ दिलाई गई। विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में सरकारी योजनाओं से सम्बंधित आमजन को जानकारी देने हेतु कैंपो का भी आयोजन किया गया, जिसमे जन-मानस द्वारा सरकारी योजनाओं के विषय मे जानकारी प्राप्त की गई। इस अवसर पर महापौर अर्चना वर्मा, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, एडीएम संजय पांडेय, जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष डी0पी0एस0 राठौर, राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्रनाथ वाल्मीकि, भाजपा जिलाध्यक्ष के0सी0मिश्रा, उप सभापति वेद प्रकाश मौर्य, अपर नगर आयुक्त एस0के0 सिंह, उप नगर आयुक्त रश्मि भारती, महाप्रबंधक जल सौरभ श्रीवास्तव एवं अन्य अधिकारी कर्मचारीगण तथा जन-प्रतिनिधि व सरकारी योजनाओं से लाभान्वित लाभार्थियों द्वारा सक्रिय प्रतिभाग किया गया।इसी क्रम में नगर निगम शाहजहांपुर के तत्वावधान में विकसित भारत संकल्प यात्रा के सफल आयोजन हेतु नगर क्षेत्र के अजीजगंज स्थल पर दोपहर 3 बजे से वैन वाहन के माध्यम से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विकसित भारत संकल्प यात्रा के इस अवसर पर विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की सरकारी योजनाओं के कैम्प भी लगाए गए, जिसमे जनमानस द्वारा जानकारी ली गयी। अजीजगंज स्थल पर आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत प्रधानमंत्री आवास शहरी योजना के लाभान्वित लाभार्थियों के भूमि पूजन का कार्यक्रम किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना , महापौर अर्चना वर्मा, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, क्षेत्रीय पार्षद मनीष गुप्ता की उपस्थिति में पीएम आवास शहरी योजना के लाभान्वित लाभार्थियों के भूमि पूजन में प्रतिभाग किया गया तथा पीएम आवास शहरी योजना के लाभार्थियों को प्रमाण पत्र भी मंत्री जी द्वारा वितरित किये गए। मंत्री जी द्वारा कार्यक्रम स्थल पर विकसित भारत संकल्प यात्रा के अंतर्गत सरकारी योजनाओं से सम्बंधित लगे कैम्प को भी देखा गया। कार्यक्रम के समापन के समय नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा जी द्वारा उपस्थित सभी को हमारा संकल्प विकसित भारत की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर अपर नगर आयुक्त एस0के0 सिंह, महाप्रबंधक जल सौरभ श्रीवास्तव, अधिशासी अभियंता सिविल आशीष त्रिवेदी एवं अन्य अधिकारी कर्मचारीगण तथा जन-प्रतिनिधि व हजारों की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

भ्रष्टाचार की चाशनी में डूबे सदर तहसील के अधिकारी भूमिधरी जमीन से नहीं हटवा पा रहे अवैध कब्जा

संवाददाता

रायबरेली। जिले में योगी सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति को भ्रष्टाचार की चाशनी में डूबे सदर तहसील के अधिकारी व राजस्व कर्मचारी इस कदर धज्जियां उड़ा रहे हैं कि।उनको योगी सरकार की किसी भी कार्यवाही का खौफ नहीं है। सदर तहसील में इस कदर भ्रष्टाचार व्याप्त है कि बिना पैसे दिए कोई भी कार्य नहीं कराया जा सकता है।।तहसील प्रशासन की लापरवाही से आए दिन आपराधिक घटनाएं बढ़ रही हैं।जनता न्याय के लिए कराहती रहती है।लेकिन अधिकारी अपने दफ्तरों से उठकर उनकी पीड़ा को नहीं सुन रहे हैं। चाहे वह तहसीलदार हो या राजस्व निरीक्षक व लेखपाल हो।यही लापरवाही एक दिन। अपराधिक घटना को अंजाम देती है और फिर लोगों को अपनी जान देकर चुकाना पड़ता है । शिकायतों पर फर्जी रिपोर्ट लगाकर जिले स्तर के अधिकारियों को यह गुमराह करते नजर आ रहे हैं। ।शासन के निर्देश पर जिले में गठित एंटी भू माफिया गठन निष्क्रिय साबित हो रहा है। जबकि कोर्ट का सख्त आदेश है कि भूमि धरी जमीन पर वह बलपूर्वक अपना कब्जा हटवा सकता है। लेकिन चाहे वो भूमिधरी जमीन, हो सरकारी जमीन सहित अन्य जमीन हो उस पर भूमाफिया बेखौफ होकर कब्जा कर खरीद फरोख्त कर रहे हैं। यहां जिले की सदर तहसील में तहसीलदार,राजस्व निरीक्षक तथा लेखपालों की मनमानी वा लापरवाही के चलते पीड़ित व्यक्ति रोजाना तहसील व पुलिस के दफ्तरों के चक्कर लगा रहे है, लेकिन उन्हें न्याय नहीं मिल रहा है। मामला सदर तहसील के अमावा गांव के रायबरेली जगदीशपुर अयोध्या राजमार्ग का है।यहां पीड़ित मोहम्मद इम्तियाज में एक जमीन खरीदी थी जिस पर विपक्षी दबंग किस्म की महिला ने जबरन कब्जा करने की नियत से अतिक्रमण कर रखा है। विपक्षी महिला द्वारा हाई कोर्ट से लेकर विभिन्न न्यायालयों में करोड़ों की जमीन को कब्जा करने व बेईमानी की नीयत से फर्जी कागजों के सहारे बार- बार अपील करती रहती है लेकिन हर बार अपील खारिज हो जाती हैं।

पीड़ित इम्तियाज ने करीब चार बार तहसील दिवस दसियों बार थाना दिवस, व डीएम कार्यालय में दो बार व अन्य कार्यालय में जाकर न्याय की गुहार लगा चुका है। लेकिन जिम्मेदार पदों पर बैठे भ्रष्टाचारी अधिकारी सिर्फ पीड़ित को नियम कानून का पाठ पढ़ाते रहते है और कार्यवाही का आश्वासन देते रहें। भूमि धरी जमीन पर हुए अवैध अतिक्रमण को हटाने के लिए कई बार सदर के नायब तहसीलदार व उप जिला अधिकारी सदर रायबरेली ने टीम बनाकर मामले के निस्तारण के लिए संबंधित क्षेत्रीय राजस्व निरीक्षक व लेखपाल को निर्देश दिया। लेकिन तहसीलदार सदर व उनके मातहतों की मनमानी कार्यशैली के चलते पीड़ित इम्तियाज अहमद को न्याय नहीं मिल पा रहा है। जबकि न्यायालय से लेकर तहसील व अन्य जगहों के पीड़ित चक्कर लगा रहा है। लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है। पीड़ित इम्तियाज का आरोप है कि कई बार सदर तहसील के कर्मचारी मौके पर पहुंचे लेकिन अवैध अतिक्रमण को हटाने में नाकाम साबित रहे। नायब तहसीलदार ऋषि मिश्रा के निर्देश पर थाना दिवस व तहसील दिवस में पहुंचने पर निस्तारण के निर्देश दिए गए थे। लेकिन तहसील अधिकारियों ने व कर्मचारियों ने पीड़ित की एक न नही सुनी। दर्जनों बार जिला प्रशासन व पुलिस इस प्रकरण में कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है।

विवि ने पाठ्यक्रमों के यूनीक आईडी रजिस्ट्रेशन एवं वेरिफिकेशन की अंतिम तिथि घोषित की

संवाददाता

अयोध्या। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय प्रशासन ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अन्तर्गत स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर संचालित पाठ्यक्रमों के यूनीक आईडी रजिस्ट्रेशन एवं वेरिफिकेशन के लिए तिथि विस्तारित की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 प्रतिभा गोयल के निर्देश पर विश्वविद्यालय प्रशासन ने छात्रहितों को देखते हुए अंतिम तिथि घोषित की। 11 दिसम्बर, 2023 तक सम्बद्ध महाविद्यालय यूनीक आईडी रजिस्ट्रेशन एवं वेरिफिकेशन कर सकते है। विवि के कुलसचिव डॉ0 अंजनी कुमार मिश्र ने बताया कि एनईपी के अन्तर्गत स्नातक स्तर पर बीए, बीएससी, बीकॉम व परास्नातक स्तर पर एमए, एमएससी, एमकॉम पाठ्यक्रम के लिए यूनीक आईडी रजिस्ट्रेशन एवं वेरिफिकेशन किए जाने की अंतिम तिथि निर्धारित की गई है। महाविद्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि उक्त तिथि तक रजिस्ट्रेशन एवं वेरिफिकेशन कराना सुनिश्चित करें। उक्त तिथि के बाद समस्त जिम्मेदारी संबंधित महाविद्यालयों की होगी। विवि के मीडिया प्रभारी डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने बताया कि इस आशय की सूचना विश्वविद्यालय की अधिकारिक वेबसाइट एवं कालेज लॉगिन पर अपलोड कर दी गई है।

एक नज़र

अवध विश्वविद्यालय के तकनीकी संस्थान में छात्र-छात्राओं के प्लेसमेंट के लिए चयन प्रक्रिया शुरू

अयोध्या। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के तकनीकी संस्थान में प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया गया। इसमें एन्वायटेबल कंपनी बंगलुरू के पांच विशेषज्ञों द्वारा असिस्टेंट इंजीनियर के पदों पर छात्रों की चयन प्रक्रिया शुरू की गई। तीन चरणों में चलने वाली चयन प्रक्रिया के प्रथम चरण में लिखित परीक्षा कराई गई। इसके बाद के चरण में ग्रुप डिसक्शन व साक्षात्कार के उपरांत छात्रों के चयन प्रक्रिया पूरी की जायेगी। इस प्लेसमेंट ड्राइव में 60 से अधिक छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। इस प्लेसमेंट में संस्थान के निदेशक प्रो0 संत शरण मिश्र ने छात्र छात्राओं का उत्साहवर्धन किया और कहा कि एन्वायटेबल कंपनी के विशेषज्ञों के द्वारा असिस्टेंट इंजीनियर के पद चयन प्रक्रिया शुरू की गई है। तीन चरणों में प्रक्रिया सम्पन्न होने उपरांत चयन किया गया जायेगा। इसमें छात्र-छात्राओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया गया। इस चयन प्रक्रिया में कंपनी की ओर से शक्ति तिवारी, सतीश पटेल, अक्षत कुमार, विनय अग्रहारकर, विनय कुमार मिश्र और अभिषेक तिवारी मौजूद रहे। इस अवसर पर डॉ0 बृजेश भारद्वाज, इंजीनियर रमेश मिश्रा सहित समस्त शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रही।

अयोध्या में राम मंदिर ट्रस्ट ने जारी किया तस्वीर

अयोध्या। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने राम मंदिर निर्माण कार्य की वर्तमान तस्वीर जारी किया है । सोशल मीडिया के माध्यम से राम मंदिर निर्माण कार्य की तस्वीर और वीडियो जारी किया है। भगवान राम लला का मंदिर का निर्माण कार्य में प्रथम फ्लोर का निर्माण कार्य चल रहा है। गर्भ ग्रह बन कर पूरी तरह से तैयार हो चुका है। 22 जनवरी 2024 को भगवान राम लला के मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा की जाएगी। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में मुख्य यजमान के रूप में शामिल होंगे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

करणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष की हत्या पर जताया विरोध

अयोध्या। राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना के अध्यक्ष सुखदेव सिंह गोगामेड़ी की गोली मारकर हत्या पर श्री राम सेना/ कल्याण समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिनेश सिंह ने रोष व्यक्त किया है । उन्होंने कहा कि समय आ गया है कि पूरे देश का राजपूत प्रभु श्रीराम के चरणो की सौगंध ले कि जब तक हत्यारो को मिट्टी मे नही मिला दिया जाता तब तक प्रभु श्री राम जी हम राजपूतो की तरफ से 22 जनवरी 2024 को भव्य राम मन्दिर मे विराजमान नही होगे । उन्होंने कहा कि अयोध्या व राजस्थान ही नही देश विदेश में जहां भी राजपूत भाई है किसी भी राजपूत भाई के घर दीपक नही जलेगा।

अयोध्या में 09 दिसम्बर को राष्ट्रीय लोक अदालत का होगा आयोजन

अयोध्या। जिला जज एवं सत्र न्यायाधीश गौरव कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में राष्ट्रीय लोक अदालत का दिनांक 09 दिसम्बर 2023 को फैजाबाद दीवानी न्यायालय परिसर में आयोजित की गयी है । इसका शुभारम्भ प्रातः 10 बजे मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया जायेगा। यह जानकारी अपर जिला जज/सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण शैलेन्द्र सिंह यादव ने दी है। इस क्रम में जिला जज के निर्देश पर उप निदेशक सूचना डा0 मुरलीधर सिंह ने सभी मीडिया बन्धुओं से अनुरोध किया है कि राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने के लिए प्रातः 10 से लोक अदालत के शुभारम्भ होने के अवसर पर जिला न्यायालय परिसर में उपस्थित रहकर होकर अपनी भागीदारी बनाने का कष्ट करें।

कृषि उत्पादन आयुक्त की अध्यक्षता में होगा आयोजन

अयोध्या। शासन के निर्देश के क्रम में मण्डलायुक्त गौरव दयाल ने बताया कि कृषि उत्पादन आयुक्त उ0प्र0 शासन की अध्यक्षता में अयोध्या एवं देवीपाटन मण्डल की संयुक्त रवी उत्पादकता गोष्ठी का आयोजन दिनांक 14 दिसम्बर 2023 को डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय विवेकानंद ऑडिटोरियम अयोध्या में प्रातः 10 बजे से किया गया है। मण्डलायुक्त ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया है कि सम्बंधित बैठक के लिए तैयारी के साथ भाग लेने आये तथा समय से सूचना भी उपलब्ध करायें। यह जानकारी संयुक्त विकास आयुक्त अरविन्द चन्द्र जैन ने दी है।

जिला अल्प संख्यक कल्याण अधिकारी ने दी जानकारी

अयोध्या। जिलाधिकारी के निर्देश के क्रम में जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी अमित प्रताप सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य हज समिति द्वारा हज यात्रा 2024 हेतु आनलाइन आवेदन दिनांक 4 दिसम्बर 2023 से आरम्भ होकर अंतिम तिथि 20 दिसम्बर 2023 तक निर्धारित की गयी है तथा आनलाइन आवेदन फार्म हज कमेटी आफ इंडिया मुम्बई की वेबसाइट hajcommittee.gov.in पर व मोबाइल ऐप हज सुविधा पर भरा जा सकेगा।

राजकीय आई टी आई में लगेगा रोज़गार मेला 11 दिसंबर को

अयोध्या। क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय, मॉडल कैरियर सेंटर, राजकीय आई0टी0आई0 अयोध्या एवं कौशल विकास मिशन, जिला उद्योग प्रोत्साहन तथा उद्यमिता विकास केन्द्र एवं श्रम विभाग अयोध्या के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 11 दिसम्बर 2023 को प्रातः 10 बजे से राजकीय आई0टी0आई0 परिसर बेनीगंज अयोध्या में एक दिवसीय रोजगार मेला का आयोजन किया जा रहा हैं। इस रोजगार मेला में निजी क्षेत्र की प्रतिष्ठित कंपनी, ब्राइट फ्यूचर आर्गेनिक हर्बल्स, एस0बी0आई0 लाइफ इंश्योरेंस, टंबल ड्राई, नेट ऐप्स आदि कंपनियां प्रतिभाग करेंगी।

डॉ0 अम्बेडकर सामाजिक समरसता के प्रणेता: प्रो0 आशुतोष सिन्हा

संवाददाता

अयोध्या। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग में बुधवार सायं बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कला एवं मानविकी संकायाध्यक्ष प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 विनोद श्रीवास्तव एवं माइक्रोबायोलॉजी के प्रो0 शैलेन्द्र कुमार द्वारा डॉ0 भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की गई। इसके अतिरिक्त छात्र-छात्राओं ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किए । इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो0 आशुतोष सिन्हा ने डॉ. अम्बेडकर को सामाजिक समरसता का प्रणेता बताते हुए उनके द्वारा दलितों, पिछड़ों एवं शोषितों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए दिए विशेष योगदान की विस्तृत चर्चा की। उन्होंने बताया की बाबा साहेब जाति, धर्म, वर्ण, लिंग आदि के आधार पर किसी भी प्रकार के विभेदीकरण के सख्त खिलाफ रहे और इसके उन्मूलन के लिए जीवन पर्यंत संघर्ष किया। प्रो0 सिन्हा ने भारतीय संविधान में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय की व्यवस्था का सम्पूर्ण श्रेय डॉ. अम्बेडकर को देते हुए इसको उनका विशिष्ट योगदान बताया। कार्यक्रम में उन्होंने डॉ. अम्बेडकर को महान अर्थशास्त्री, प्रकांड विद्वान एवं महान राष्ट्रभक्त बताते हुए छात्रों को उनके जीवन से प्रेरणा लेने के साथ राष्ट्रहित में योगदान देने का आह्वान किया । कार्यक्रम में अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग में प्रो0 विनोद श्रीवास्तव ने छात्रों को डॉ. अम्बेडकर के जीवन से सीख लेने एवं अन्याय के खिलाफ संघर्ष एवं उसका विरोध करने की बात कही। कार्यक्रम में माइक्रोबायोलॉजी विभाग के प्रो0 शैलेंद्र कुमार ने छात्रों से डॉ बाबासाहेब के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कहीं। उन्होंने डॉ0 अंबेडकर के जीवन वृत्त पर विस्तृत चर्चा की। डॉ0 अलका श्रीवास्तव ने अम्बेडकर के जीवन से संबंधित विभिन्न पहलुओं से परिचित कराया। कार्यक्रम में दिलीप पाल, मानसी सिंह, अहमद फराज सहित अन्य मौजूद रहे।

अयोध्या में जिलाधिकारी नितीश कुमार ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया वाहन

संवाददाता

अयोध्या। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत प्रचार वाहन को जिलाधिकारी श्री नितीश कुमार एवं डा0 संजय कुमार त्रिपाठी उप कृषि निदेशक अयोध्या द्वारा संयुक्त रूप से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। फसल बीमा योजना के प्रति किसानों को जागरूक करने के लिए प्रचार वाहन को रवाना किया गया। दिनांक 8 दिसम्बर 2023 दिन शुक्रवार को कलेक्ट्रेट परिसर में जिलाधिकारी नितीश कुमार ने प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जिलाधिकारी ने बताया कि प्रचार वाहन जनपद के विभिन्न क्षेत्रों यथा विकासखंडो में जाकर किसानों को फसल बीमा योजना के बारे में जागरूक करेगा। उन्होंने बताया कि समस्त विकास खंडों में वर्ष 2023 से 2026 के खरीफ एवं रबी मौसम में क्रमशः धान एवं गेहूं की फसल को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लिए अधिसूचित किया गया है। थान में 1704 रुपए प्रति हे0 व गेहूं में 1167 रुपए प्रति हे0 कृषक अंश बीमा प्रीमियम है। बीमा कराने कि अंतिम तिथि 31 दिसंबर है। वर्ष 2023-24, 2024-25 एवं 2025- 26 के खरीफ व रबी मौसम में पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना खरीफ सीजन में लागू है। खरीफ सीजन में केला पर फसल बीमा विकासखंड सोहावल, रुदौली, माया बाजार, पूरा बाजार, बीकापुर व तारुन में लागू है। केला पर 7500 रुपए प्रति हे. कृषक अंश बीमा प्रीमियम है तथा 31 जुलाई अंतिम तिथि है। रबी सीजन में आम विकासखंड मसौधा, सोहावल, मयाबाजार में लागू है आम पर 3500 रुपए प्रति हे0, कृषक अंश बीमा प्रीमियम है। 15 दिसंबर अंतिम तिथि है। उन्होंने कहा कि बीमा के संबंध में अधिक जानकारी के लिए अधिकृत इफको टोकियो जनरल इंश्योरेंस कम्पनी लि. के जिला प्रबंधक के मोबाइल नम्बर-9630462412 से संपर्क कर किसान फसल बीमा करा सकते है। इस अवसर पर उप निदेशक कृषि भी उपस्थित रहे ।

जिलाधिकारी नितीश कुमार ने शादी अनुदान के बारे में दी जरूरी जानकारी

संवाददाता

अयोध्या। जिलाधिकारी नितीश कुमार ने बताया कि वर्तमान वित्तीय वर्ष में अन्य पिछड़ा वर्ग (अल्पसंख्यक वर्ग को छोड़कर) निःसहाय, निर्धन तथा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों की पुत्री की शादी हेतु शादी अनुदान योजना के अंतर्गत एक पिता की अधिकतम दो पुत्रियों हेतु प्रति पुत्री 20000 रुपये अनुदान दिया जाता है। इसके लिए शासन द्वारा जनपद अयोध्या को 464 लाभार्थियों हेतु धनराशि जारी की जा चुकी है। अभी तक कुल 136 लाभार्थियों को 27.20 लाख रुपए से लाभान्वित किया जा चुका है। योजना पूर्णतः ऑनलाइन है । आवेदन करने हेतु आवेदक एवं उसकी पुत्री के आधार नंबर की आवश्यकता है। पंजीकरण करते समय दोनों आधार नंबर से कोई मोबाइल नंबर लिंक होना चाहिए। जिस पर आवेदन करते समय ओटीपी प्राप्त होता है । ओटीपी के माध्यम से लॉगिन करने के पश्चात आवेदन की प्रक्रिया पूर्ण की जाती है। शादी के तिथि तक पुत्री की उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक एवं वर की उम्र 21 वर्ष या उससे अधिक होनी चाहिए। ऑनलाइन आवेदन शादी की तिथि से 90 दिन पहले और 90 दिन बाद तक portal https://www.shadianudan.upsdc.gov.in पर किया जा सकता है। ऑनलाइन आवेदन करते समय आवेदक को अपने जाति प्रमाण पत्र आय प्रमाण पत्र एवं बैंक संबंधित विवरण की आवश्यकता पड़ती है। ऑनलाइन आवेदन में गलत प्रविष्टि करने पर ऑनलाइन आवेदन निरस्त होने की संपूर्ण जिम्मेदारी संबंधित आवेदक की होगी। ऑनलाइन आवेदन किसी भी जन सेवा केंद्र, लोकवाणी केंद्र, साइबर कैफे, निजी इंटरनेट या व्यक्तिगत स्मार्टफोन से किया जा सकता है। ऑनलाइन आवेदन करने के उपरांत ऑनलाइन आवेदन का प्रिंट आउट और उसके साथ समस्त संलग्नक जैसे कि जाति प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, आय प्रमाण पत्र, शादी का कार्ड की छाया प्रति इत्यादि संबंधित खंड विकास अधिकारी या संबंधित उप जिलाधिकारी कार्यालय में जमा कराना सुनिश्चित करें। उक्त योजना के अंतर्गत जनपद अयोध्या में काफी कम आवेदन किया जा रहा है। अतः समस्त पात्र आवेदकों से अनुरोध है कि कृपया उक्त योजना का लाभ लेने हेतु पोर्टल पर अधिक से अधिक ऑनलाइन आवेदन यथाशीघ्र करना सुनिश्चित करें। उक्त जानकारी जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी अयोध्या ने दी है।

कृषि विवि व जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के बीच एमओयू

संवाददाता

कुमारगंज अयोध्या। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय व जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, अयोध्या के बीच एक एमओयू हुआ। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति डा. बिजेंद्र सिंह व जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की ओर से प्राचार्य जय प्रताप सिंह ने एमओयू पर हस्ताक्षर किया। इस एमओयू के तहत इस संस्थान द्वारा छात्र-छात्राओं के लिए समय-समय पर व्याख्यान, सेमिनार, वेबिनार के आयोजन कराए जाएंगे। छात्र-छात्राओं को व्यवसायिक शिक्षा के प्रति उन्मुखीकरण एवं विभिन्न कौशल प्रशिक्षण का मौका मिलेगा। यह संस्थान छात्र-छात्राओं के लिए खेल में प्रतिभागिता के अवसर के साथ-साथ नई शिक्षा नीति से जोड़ने पर कार्य करेगा जिससे बच्चों की बौद्धिक क्षमता का विकास होगा। वहीं दूसरी तरफ कृषि विश्वविद्यालय शोध कार्यों में मदद के साथ-साथ शिक्षण विधियों के विकास एवं मूल्यांकन तकनीक विकसित करने में इस शिक्षण संस्थान का सहयोग करेगा। दोनों पक्ष एक दूसरे के भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का उपयोग कर छात्र-छात्राओं के हित में कार्य करेंगे। यह सभी सहयोग छात्र- छात्राओ को निःशुल्क प्रदान किए जाएंगे। इस मौके पर कुलपति के सचिव डा. जसवंत सिंह, कुलसचिव डा. पीएस. प्रमाणिक, प्राचार्य जय प्रताप सिंह, ज्ञानेंद्र कुमार मौजूद रहे।

कारोबारी से सेब मंगाकर ठगी करने वाला व्यापारी गिरफ्तार

संवाददाता

गोरखपुर। पुलवामा निवासी अब्दुल सलाम बट ने गोरखपुर में जनता दर्शन में प्रार्थना-पत्र दिया था। उन्होंने बताया कि जम्मू कश्मीर में सेब का कारोबार करते हैं। गोरखपुर के कृष्णा यादव ने अक्तूबर महीने में लगभग 69 लाख रुपये का सेब मंगाया।

जम्मू कश्मीर के पुलवामा निवासी कारोबारी अब्दुल सलाम बट से सेब मंगाकर 29.42 लाख रुपये हड़पने के आरोपी व्यापारी कृष्णा यादव को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी को पुलिस ने बृहस्पतिवार को कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। आरोपी व्यापारी कृष्णा यादव ने 69.42 लाख का सेब मंगाया था। 40 लाख भुगतान के बाद बाकी की रकम हड़प ली गई थी। आरोपी कृष्णा यादव शाहपुर के जंगल तुलसीराम बिछिया सर्वोदयनगर का निवासी है। वर्तमान में वह बलिया के दोकटी थाना क्षेत्र के सुकरौली में रह रहा था। जानकारी के मुताबिक, पुलवामा निवासी अब्दुल सलाम बट ने गोरखपुर में जनता दर्शन में प्रार्थना-पत्र दिया था। उन्होंने बताया कि जम्मू कश्मीर में सेब का कारोबार करते हैं। गोरखपुर के कृष्णा यादव ने अक्तूबर महीने में लगभग 69 लाख रुपये का सेब मंगाया। रुपये मांगने पर 40 लाख रुपये का भुगतान कर दिया, बाकी 29.42 लाख रुपये नहीं दिए। आरोप है कि फोन करने पर आरोपी ने कहा कि उसके पिता एक पार्टी के विधायक हैं। किसी की हिम्मत नही हैं उससे रुपये ले ले। सेब के बाकी रुपये न मिलने पर पीड़ित गोरखपुर पहुंचा और आरोपी के घर गया तो उसकी मां ने बताया कि वह घर पर नहीं है। कुछ देर बाद आरोपी फोन कर धमकी देने लगा। इसके बाद सेब कारोबारी ने जनता दर्शन में मुख्यमंत्री से गुहार लगाई। उनके निर्देश पर शाहपुर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया था।

तमंचा दिखाकर ज्वैलर से लूटे गहने और नकदी दो दिसंबर को व्यापारी को मारी थी गोली

संवाददाता

गोरखपुर। जल्दी में रुकने का प्रयास करने पर बाइक समेत राजेश गिर पड़े। पीछे से आए बदमाश बाइक लेकर फरार हो गए। एक किलोमीटर दूर ले जाकर बाइक की डिकी तोड़कर उसमें रखा गहना और नकदी लेकर फरार हो गए।

गुलरिहा इलाके के जैनपुर गांव में स्थित ईंट भट्ठा के पास शुक्रवार की शाम 6.45 बजे के करीब बाइक सवार बदमाशों ने स्वर्ण व्यापारी राजेश गुप्ता को तमंचा दिखाकर दो लाख रुपये कीमत के गहने व तीन हजार नकदी लूट कर सनसनी फैला दी। वारदात के बाद असलहा लहरात हुए बदमाश फरार हो गए और एक किलोमीटर दूर बाइक छोड़कर फरार हो गए। एक वर्ष पहले दो दिसंबर 2022 को भी दुकान में घुसकर इसी व्यापारी को गोली मारकर लूट की घटना हुई थी। तब पुलिस की जांच में घटना संदिग्ध पाई गई थी, लेकिन पर्दाफाश नहीं हो सका था। घटना की सूचना पर एसएसपी डॉ. गौरव ग्रोवर, एसपी नार्थ मनोज अवस्थी मौके पर पहुंच गए। जानकारी के मुताबिक, गुलरिहा के करमहां निवासी राजेश गुप्ता की जंगल डुमरी नंबर एक गांव के चंबल घाटी चौराहे पर सूर्यांश ज्वेलर्स के नाम से गहने की दुकान है। शुक्रवार की शाम 6ः45 बजे वह दुकान बंद कर बाइक से घर जा रहे थे। डिकी में उन्होंने दो लाख रुपये कीमत के गहने और जेब में तीन हजार रुपये रखे थे। जैनपुर गांव में बामंत मार्का ईंट भट्ठे के पास पीछे से आए बाइक सवार दो बदमाशों ने ओवरटेक करने के साथ ही तमंचा निकाल लिया और बाइक रोकने को कहा। जल्दी में रुकने का प्रयास करने पर बाइक समेत राजेश गिर पड़े। पीछे से आए बदमाश बाइक लेकर फरार हो गए। एक किलोमीटर दूर ले जाकर बाइक की डिकी तोड़कर उसमें रखा गहना और नकदी लेकर फरार हो गए। एसपी नार्थ मनोज अवस्थी ने बताया कि सीसी कैमरा फुटेज की मदद से बदमाशों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है।

एक साल पहले गोली मारकर हुई थी लूट

दो दिसंबर 2022 को दुकान में पहुंचे दो बदमाशों ने मुंह में तमंचा सटाकर राजेश गुप्ता को गोली मार दी थी। वारदात के बाद असलहा लहराते हुए फरार हो गए थे। सर्राफ के शोर मचाने पर चौराहे के लोगों ने पकड़ने के लिए दौड़ाया तो बदमाशों ने उनके ऊपर फायरिंग कर डरा दिया था। गुलरिहा थाना पुलिस के साथ ही क्राइम ब्रांच की टीम ने छह माह तक खोजबीन की, लेकिन अभी तक पता नहीं चला।

मेरे तीसरे कार्यकाल में दुनिया की टॉप तीन इकॉनमी में आएगा भारत

धन्ना सेठों को पीएम ने दिया ये संदेश

संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड में निवेश के महाकुंभ का आगाज हो गया है। देहरादून के एफआरआई में दो दिवसीय वैश्विक निवेशक सम्मेलन का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुभारंभ किया। सम्मेलन में देश-दुनिया के 5000 से अधिक निवेशक और प्रतिनिधि शामिल हुए हैं, जिन्हें संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कई बड़ी बातें कहीं। उत्तराखंड की खूबियां बताते हुए पीएम मोदी ने निवेशकों को राज्य में निवेश करने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ प्रधानमंत्री ने मंच से अगले आम चुनाव को लेकर भी इशारा कर दिया।

संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री ने कहीं बड़ी-बड़ी बातें

बड़ी-बड़ी बातें

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक निवेशक सम्मेलन के मंच से कहा कि जिसमें दम हो, मैदान में आ जाएं, फायदा उठा लें। मैं गारंटी देता हूं कि जो बातें हम बताते हैं उन्हें पूरा कराने के लिए हम खड़े भी रहते हैं। उन्होंने कहा कि मेरे जीवन के एक पहलू को बनाने में इस धरती का बड़ा योगदान है।अगर उसे कुछ लौटाने का अवसर मिलता है तो उसका आनंद भी कुछ और होता है। आइये इस पवित्र धरती में चल पड़िए। आपके काम में कभी कोई बाधा नहीं आएगी। हमारा देश नई ऊर्जा के साथ खड़ा हो सकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने शिखर सम्मेलन के मंच से बड़ा संदेश दिया है। उन्होंने कहा कि मैं देशवासियों को भरोसा दिलाता हूं कि मेरे तीसरे कार्यकाल में हमारा देश, दुनिया के टॉप 3 इकॉनमी में आकर रहेगा। पीएम मोदी ने अगले आम चुनाव को लेकर भी इशारा किया है। पीएम मोदी ने डबल इंजन सरकार के फायदे गिनाए। उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार के फायदे का उदाहरण टूरिस्म सेक्टर भी है। कहा कि देश के धन्ना सेठों को कहना चाहता हूं कि हमारे यहां माना जाता है कि शादी के जोड़े ईश्वर तय करता है। मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि जोड़े अपने जीवन की यात्रा यहां आने के बजाय विदेश में क्यों जाते है। मेक इन इंडिया की तरह वेड इन इंडिया भी चलाया जाए। आप कुछ निवेश कर पाओ या नहीं, लेकिन अपने परिवार की एक डेस्टिनेशन वेडिंग अगले पांच साल में उत्तराखंड में करें। अगले पांच साल में पांच हजार डेस्टिनेशन वेडिंग भी उत्तराखंड में हुई तो ये एक नया क्षेत्र खड़ा हो जाएगा। देश के धन्ना सेठ इस बारे में सोचेंगे तो बड़ा बदलाव आएगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सम्मेलन में पहुंचे निवेशकों से कि आप सभी को भी उत्तराखंड की विकास यात्रा से जुड़ने का बड़ा अवसर मिल रहा है। बीते दिनों टनल से सुरक्षित निकालने के सफल अभियान पर आप सभी का अभिनंदन करता हूं। बोले कि मैंने उत्तराखंड की भावनाओं और संभावनाओं की निकट से देखा है। उन्होंने गीत...जहां अंजुली में गंगाजल हो, जहां हर एक मन बस निश्चल हो, जहां नारी में सच्चा बल हो उस देवभूमि का आशीर्वाद लिए मैं चलता जाता हूँ..है भाग्य मेरा सौभाग्य मेरा मैं तुमको शीश नवाता हूं...के माध्यम से उत्तराखंड के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। निवेशक सम्मेलन में पहुंचे पीएम नरेंद्र मोदी। धानमंत्री ने कहा कि यहां आकर मन धन्य हो जाता है। कुछ वर्ष पहले जब मैं बाबा केदार के दर्शन को निकला था तो अचानक मेरे मुंह से निकला था कि 21वीं सदी का ये तीसरा दशक उत्तराखंड का दशक है। मुझे खुशी है कि उस कथन को मैं लगातार पूरा होते देख रहा हूं। निवेशक सम्मेलन में पहुंचे पीएम नरेंद्र मोदी। भारत की मजबूती का फायदा उत्तराखंड समेत देश के हर राज्य को हो रहा है। उत्तराखंड इसलिए भी विशेष है क्योंकि यहां डबल इंजन सरकार है। डबल प्रयास चारों तरफ दिख रहे हैं। राज्य सरकार तेजी से यहां काम हो रहा है।

एक नज़र

जयराम ठाकुर बोले- प्रतिभा सिंह का बयान सरकार की स्थिति बताने के लिए काफी

संवाददाता

मंडी। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष प्रतिभा सिंह का बयान और नगर निगम सोलन के मेयर का चुनाव ही काफी है यह बताने के लिए कि प्रदेश में सरकार और संगठन के बीच किस तरह का तालमेल है। पूर्व सीएम एवं नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा कि कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष प्रतिभा सिंह का बयान और नगर निगम सोलन के मेयर का चुनाव यह बताने के लिए काफी है कि प्रदेश में सरकार और संगठन के बीच किस तरह का तालमेल है। प्रदेश सरकार का एक साल पूरा होने पर भाजपा पूरे प्रदेश में विरोध दिवस मनाएगी। प्रदेश इस वक्त आपदा के दौर से गुजर रहा है। हजारों लोग बेघर हो चुके हैं और कई लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। ऐसे में सरकार जश्न मनाने की सोच रही है। बेहतर होता कि प्रभावितों के हित में काम करते। प्रदेश सरकार अपने एक वर्ष की कोई एक उपलब्धि बता दे जिसके दम पर वे जश्न मनाने जा रही है। झूठी गारंटियां देकर सत्ता में आए लेकिन एक भी पूरी नहीं कर सके। एक वर्ष में 12 हजार करोड़ का कर्ज लेकर रिकॉर्ड बना दिया है। जयराम ठाकुर ने कहा कि सरकार मंडी जिले के साथ सरकार सौतेला व्यवहार कर रही है। मंडी जिला को एक तरह से खंडहर बनाकर रख दिया गया है। एक साल में सरकार ने सभी विकास कार्यों को मंझधार में छोड़ दिया है। शिवधाम और कॉलेज भवन का निर्माण कार्य अधूरा पड़ा है। यूनिवर्सिटी का दायरा घटा दिया गया। ग्रांट भी बंद कर दी गई है। लोअर हिमाचल के बच्चों के साथ सरकार कुठाराघात कर रही है।

सिस्सू में बर्फ देखने के लिए उमड़े पर्यटक, तीन दिन में 800 वाहन पहुंचे लाहौल

संवाददाता

कुल्लू। लाहौल में बड़ी संख्या में पर्यटक उमड़ रहे हैं। सिस्सू में बर्फ देखने के लिए रोज सैकड़ों पर्यटक वाहन पहुंच रहे हैं। पिछले सप्ताह हुई बर्फबारी से लाहौल में बड़ी संख्या में पर्यटक उमड़ रहे हैं। सिस्सू में बर्फ देखने के लिए रोज सैकड़ों पर्यटक वाहन पहुंच रहे हैं। अब कोकसर भी सैलानी पहुंच रहे हैं। तीन दिन में अटल टनल रोहतांग होकर रोज 800 से अधिक पर्यटक वाहन लाहौल पहुंचे हैं। क्रिसमस और नए साल के जश्न से पहले कुल्लू-मनाली और लाहौल के पर्यटन कारोबार के लिए अच्छी खबर है। लाहौल के सिस्सू के साथ चंद्रा नदी के दूसरी तरफ वाटरफॉल और हेलीपैड के समीप जमी झील का नजारा पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। चारों तरफ बर्फ की चादर होने से यहां ठंड बढ़ गई है और धूप खिलने से यह खूबसूरती और भी निखर जाती है। सिस्सू आने वाले पर्यटक इन दिनों ताजा बर्फ की चमक देख घाटी के कायल हो रहे हैं। इस सप्ताह से अटल टनल रोहतांग के नॉर्थ पोर्टल, सिस्सू झील और इसके आसपास क्षेत्रों के साथ कोकसर में भारी संख्या में पर्यटक पहुंचने लगे हैं। इन जगहों पर मस्ती करने के बाद शाम को मनाली लौट रहे हैं। दिल्ली की महिला पर्यटक मीनाक्षी कोहली, भावना और अरघोष ने कहा कि यहां ठंड जरूर है, लेकिन वह बर्फ में खूब मस्ती कर रहे हैं। व्यवसायी राजीव कुमार और सुशील ने बताया ताजा बर्फबारी के बाद सिस्सू क्षेत्र में काफी संख्या में पर्यटक पहुंच रहे हैं।

रोज अटल टनल से आर-पार हो रहे 4,000 वाहन, लग रहा जाम

पिछले तीन दिन से अटल टनल रोहतांग से रोज करीब 4,000 वाहन आर-पार हो रहे हैं। इससे अटल टनल रोहतांग के नॉर्थ पोर्टल से सिस्सू तक सुबह से शाम तक जाम लग रहा है। चार किलोमीटर के दायरे में दिनभर वाहन रेंगते हुए नजर आ रहे हैं। नॉर्थ पोर्टल, सिस्सू और कोकसर की तरफ के पार्किंग स्थल पर पैक होने से सैलानी मजबूर होकर अपने वाहनों को सड़क किनारे पार्क करने को मजबूर हैं। बर्फ गिरने के बाद कुल्लू-मनाली और लाहौल में लगातार सैलानियों की भीड़ बढ़ रही है और स्नो प्वाइंट भी गुलजार हो गए हैं। शुक्रवार को पर्यटक कोकसर के समीप यंद्रक पहुंचे और यहां सैलानियों ने स्की ट्यूब और एटीवी राइडिंग का खूब आंनद लिया। पुलिस प्रशासन के मुताबिक अटल टनल रोहतांग से होकर दोनों तरफ से करीब 4,000 से अधिक वाहन आर-पार हो रहे हैं। एटीवी यूनियन के प्रधान आशीष, मनाली में स्कीइंग के प्रधान अनूप राज, कोटबूट यूनियन के प्रधान अमर चंद ने बताया कि मनाली में पर्यटकों की आमद बढ़ रही है।

फिर माइनस में केलांग, मनाली का न्यूनतम तापमान

कई भागों में दो दिन बारिश-बर्फबारी के आसार

संवाददाता

शिमला । न्यूनतम तापमान में कमी दर्ज होने से प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों में सुबह और शाम के समय मौसम में ठंडक बढ़ गई है। हिमाचल प्रदेश के उच्च पर्वतीय क्षेत्र केलांग और मनाली का न्यूनतम तापमान फिर माइनस में पहुंच गया है। गुरुवार रात को केलांग में न्यूनतम तापमान माइनस 5.9, समदो में माइनस 4.5, मनाली माइनस 0.8, कल्पा 0.6, भुंतर 1.8, नारकंडा 2.5, मंडी 2.9, सोलन 3.8, ऊना 5.0, शिमला 5.6 और धर्मशाला में 8.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। न्यूनतम तापमान में कमी दर्ज होने से प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों में सुबह और शाम के समय मौसम में ठंडक बढ़ गई है। मौसम विज्ञान केंद्र शिमला ने 11 और 12 दिसंबर को प्रदेश के मध्य और उच्च पर्वतीय कुछ क्षेत्रों में बारिश और बर्फबारी का पूर्वानुमान जताया है। 10 दिसंबर तक पूरे प्रदेश में मौसम साफ बना रहने की संभावना है। शुक्रवार को राजधानी शिमला सहित प्रदेश के सभी क्षेत्रों में मौसम साफ रहा। शुक्रवार को ऊना में अधिकतम तापमान 25.5, कांगड़ा में 23.8, सुंदरनगर में 23.5, सोलन में 22.2, चंबा-भुंतर में 22.0, धर्मशाला में 21.0, मंडी में 20.4, नाहन में 19.1, शिमला में 15.5, मनाली में 14.9, कल्पा में 13.0, केलांग में 11.0 और डलहौजी में 10.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ।

कुल्लू की पीज साइट पैराग्लाइडिंग शुरू

उधर, मौसम खुलने के बाद कुल्लू जिला मुख्यालय ढालपुर की पीज साइट पर पैराग्लाइडिंग भी शुरू हो गई है। कुल्लू और लाहौल में हुई ताजा बर्फबारी के बाद सैलानियों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। अटल टनल रोहतांग के नॉर्थ पोर्टल, सिस्सू व कोकसर में बर्फ के बीच अठखेलियां कर रहे हैं। वहीं कुल्लू जिला की साहसिक गतिविधियों का भी सैलानी आनंद ले रहे हैं। ढालपुर की पीज पैराग्लाइडिंग साइट में भी रोज पैराग्लाइडिंग हो रही है।

लोअर पीएमजी में एक विशाल आदिवासी मेला। आदिवासियों की जमीन बेचने को लेकर कैबिनेट के फैसले का विरोध

भुबनेर्स्व। भुवनेश्वर लोअर पीएमजी में आदिवासियों का विरोध प्रदर्शन. राज्य सरकार द्वारा आदिवासियों की जमीन बेचने के कैबिनेट के फैसले का विरोध किया जा रहा है. आंदोलन का संचालन ओडिशा राज्य पेसाग्राम विधानसभा समन्वय समिति कर रही है. समिति ने पारंपरिक आदिवासी संगीत वाद्ययंत्रों के साथ आंदोलन की शुरुआत की। कैबिनेट के फैसले को निलंबित नहीं बल्कि पूरी तरह वापस लेने की मांग की गई है. इसके साथ ही समिति ने पेसा कानून लागू करने की मांग की।

ट्रक संचालकों की हड़ताल का असर

❖ तीन दिन से अल्मोड़ा-बागेश्वर नहीं पहुंचा फल-सब्जी का ट्रक, राशन भी हुआ कमै।

संवाददाता

अल्मोड़ा। ट्रक संचालकों की हड़ताल से अल्मोड़ा और बागेश्वर में हालात बिगड़ने लगे हैं और जनता की परेशानी बढ़ गई है। जरूरी सामान की आपूर्ति लड़खड़ा गई है। दुकानों से सब्जियां, खाद्य सामग्री सहित कपड़े भी गायब होने लगे हैं। ट्रक संचालकों की हड़ताल से जिले में हालात बिगड़ने लगे हैं और जनता की परेशानी बढ़ गई है। जरूरी सामान की आपूर्ति लड़खड़ा गई है। दुकानों से सब्जियां, खाद्य सामग्री सहित कपड़े भी गायब होने लगे हैं। सहागल सीजन में सब्जी, परचून का सामान सहित कपड़े न होने से व्यापारियों के लिए शादियों में इसकी आपूर्ति करना चुनौती बन गया है और वे बुकिंग कैंसल कराने लगे हैं। हल्द्वानी से हर रोज जिला मुख्यालय सहित अन्य हिस्सों में 20 से अधिक ट्रक 1200 क्विंटल सब्जी लेकर पहुंचते हैं। वहीं 160 से अधिक ट्रक के जरिए दाल, चावल, कपड़े सहित अन्य निर्माण सामग्री की आपूर्ति होती है। बीते तीन दिन से एक भी ट्रक सब्जी सहित अन्य सामान लेकर जिले में नहीं पहुंच सका है, इससे आपूर्ति पूरी तरह लड़खड़ा गई है। इन हालात में जिले में फल, सब्जी, परचून, निर्माण सामग्री का संकट खड़ा हो गया है। मंडी सहित अन्य दुकानों में सब्जी का स्टॉक खत्म होने को है। परचून की दुकानों में आटा, दाल, चावल नहीं पहुंच पा रहा है। किसी तरह व्यापारी पुराने स्टॉक से लोगों की जरूरत पूरी कर रहे हैं।

निर्माण सामग्री का स्टॉक भी खत्म

अल्मोड़ा में दुकानों में सरिया, सीमेंट, ईंट सहित अन्य सामग्री का स्टॉक खत्म हो रहा है। ऐसे में व्यापारी बुकिंग नहीं ले रहे।

बागेश्वर में शादी के लिए कम पड़ रहीं हैं सब्जियां

बागेश्वर जिले में ट्रकों की हड़ताल का असर सब्जियों पर दिखने लगा है। दुकानों में रखा सब्जियों का स्टॉक खत्म होने को है। हड़ताल का सर्वाधिक असर बरातों की मांग पूरी करने पर पड़ रहा है। दुकानों में टमाटर की कमी हो गई है। अन्य सब्जियों की कमी होने के आसार भी बनने लगे हैं। हालांकि किराना की दुकानों में राशन आदि की फिलहाल कमी नहीं है।

शादी के कपड़े भी मिलने मुश्किल

अल्मोड़ा में इन दिनों शादियों के लिए कपड़ों की जमकर खरीदारी हो रही है। दूल्हा, दुल्हन पक्ष के लोग शादी की तैयारियों में जुटे हैं। ट्रक के पहिए थमने से मैदानी क्षेत्रों से कपड़ों की भी आपूर्ति नहीं हो पा रही है।

रानीताल में हाइड्रा वाहन पलटा

दूल्हे समेत चार लोग बाल-बाल बचे

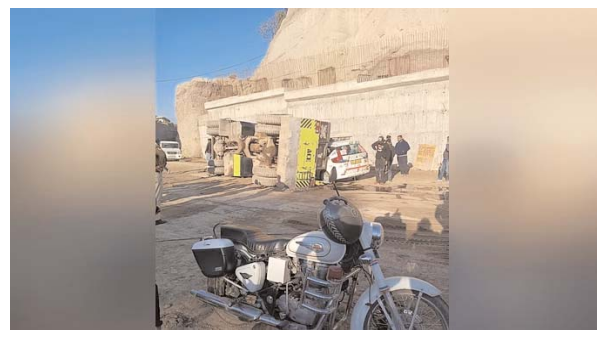

संवाददाता

गुलेर (कांगड़ा)। डीएसपी देहरा अनिल कुमार ने मामले की पुष्टि करते हुए बताया कि दूल्हे की गाड़ी क्षतिग्रस्त हुई है। वहीं दोनों पक्षों में रजामंदी होने से पुलिस में कोई मामला दर्ज नहीं हुआ है। रानीताल में एक सरिया उतार रहा हाइड्रा वाहन दूल्हे की गाड़ी पर पलट गया। गनीमत रही कि गाड़ी में सवार दूल्हा व अन्य लोग बाल-बाल बच गए। बरात शाहपुर की तरफ जा रही थी। हाइड्रा वाहन पलटने से दुल्हे की गाड़ी को नुकसान पहुंचा है। गाड़ी में दूल्हे के अलावा चार लोग और भी बैठे हुए थे जोकि सुरक्षित बताए जा रहे हैं। हादसे की सूचना मिलते ही रानीताल पुलिस मौके पर पहुंची और घटना का जायजा लिया। डीएसपी देहरा अनिल कुमार ने मामले की पुष्टि करते हुए बताया कि दूल्हे की गाड़ी क्षतिग्रस्त हुई है। वहीं दोनों पक्षों में रजामंदी होने से पुलिस में कोई मामला दर्ज नहीं हुआ है।

गृहमंत्री बोले- छात्र शक्ति का नारा सुन 30 साल पीछे लौट गया

संगठन कर रहा चरित्र निर्माण

संवाददाता

दिल्ली। गृहमंत्री ने कहा कि यह आजादी के अमृत काल का अधिवेशन है। आने वाले 25 साल भारत सर्व प्रथम का पीएम का संकल्प है। मैं विद्यार्थी परिषद का ऑर्गेनिक प्रोडक्ट हूं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा दिल्ली के बुराड़ी स्तिथ डीडीए ग्राउंड में आयोजित 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में आए कार्यकर्तायों को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने संबोधित किया। उन्होंने कहा कि छात्र शक्ति का नारा सुनकर मैं 30 साल पीछे के जीवन में लौट गया। एबीवीपी चरित्र निर्माण कर रहा है। मेरे छात्र राजनीतिक जीवन की शुरुआत पंडाल के सबसे पीछे बैठकर हुई। मैं आज गर्व की अनुभूति कर रहा हूं। गृहमंत्री ने कहा कि यह आजादी के अमृत काल का अधिवेशन है। आने वाले 25 साल भारत सर्व प्रथम का पीएम का संकल्प है। मैं विद्यार्थी परिषद का ऑर्गेनिक प्रोडक्ट हूं। एबीवीपी न रास्ता भटका न सरकारों को भटकने दिया। एबीवीपी ने हर चुनौती के सामने संघर्ष किया है। मदन दस देवी जी ने मेरे जैसे कार्यकर्ताओं का उचित मार्गदर्शन किया। सभी मार्गदर्शकों को प्रणाम करता हूं। एबीवीपी ने स्वर का मतलब हर क्षेत्र में बताया। एबीवीपी की सुगंध हर क्षेत्र में है। घुसपैठ के सामने सबसे बड़ा आंदोलन एबीवीपी ने चलाया। आपातकाल के खिलाफ परिषद के कार्यकर्ता जेल भी गए और कष्ट सहे पर विजयी हुए। समय बदल गया है। अब काम करने की जरूरत है। राष्ट्र निर्माण में हम लगे हैं। देश के लिए जीने की जरूरत है। वर्तमान में घपले घोटाले की जगह नई नीतियों ने ली। देश की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। लोगों को मूलभूत सुविधाएं दी का रही है। अनुच्छेद 370 खत्म, लाल चौक पर तिरंगा लहराने से कोई नहीं रोक सकता। पूर्वोत्तर में शांति की स्थापना पिछले 10 साल में पीएम मोदी की सरकार के कारण हुआ। आने वाले दिनों में भारत को सर्व प्रथम होने से कोई नहीं रोक सकता।

श्रम विभाग और चाइल्ड हेल्प लाइन की संयुक्त कार्रवाई तीन ईंट भट्टों में मारा छापा, कुछ नहीं लगा हाथ

संवाददाता

ऊधम सिंह नगर। रुद्रपुर में ईंट भट्टों में श्रम विभाग की टीम ने तीन ईंट भट्टों में छापा मारा। लेकिन ईंट भट्टों में बाल श्रमिक नहीं मिले। श्रम विभाग के अधिकारियों का कहना है कि निरीक्षण के दौरान ईंट भट्टे बंद मिले थे, जल्द ही ईंट भट्टों का दोबारा निरीक्षण किया जाएगा। रुद्रपुर में ईंट भट्टों में बाल श्रम की आशंका पर शुक्रवार को श्रम विभाग की टीम ने सैजना स्थित तीन ईंट भट्टों में छापे मारे। लेकिन ईंट भट्टों में बाल श्रमिक नहीं मिले। श्रम विभाग के अधिकारियों का कहना है कि निरीक्षण के दौरान ईंट भट्टे बंद मिले थे, जल्द ही ईंट भट्टों का दोबारा निरीक्षण किया जाएगा। बाल एवं किशोर श्रमिकों के बचाव एवं पुनर्वास अभियान के तहत जिला बाल एवं कल्याण विभाग, चाइल्ड हेल्पलाइन, जिला बाल कल्याण समिति, पुलिस विभाग और श्रम विभाग की टीम ने ईंट भट्टों का औचक निरीक्षण किया। श्रम प्रवर्तन अधिकारी पीआर शैल ने बताया कि सैजना स्थित न्यू भारत ब्रीक फील्ड, उत्तरांचल ब्रीक और उत्तराखंड ब्रीक में निरीक्षण किया। लेकिन ईंट भट्टों में कार्य होता नहीं पाया गया। ईंट भट्टों में शुक्रवार को अवकाश था। शीघ्र दोबारा निरीक्षण किया जाएगा। उन्होंने बताया कि न्यू भारत ब्रीक में 15 परिवार व 50 श्रमिक कार्यरत थे। इसी तरह उत्तरांचल ब्रीक में 16 परिवार व श्रमिक और उत्तराखंड ब्रीक में 17 परिवार व 60 श्रमिक कार्यरत थे। वहां पर पुष्पा पानू, चांदनी रावत, रूबी, स्मिता आदि थे।

30 खिलाड़ियों की चमकी किस्मत

काश्वी गौतम और सदरलैंड रहीं सबसे महंगी देखें टीमों की फाइनल लिस्ट

मुंबई। महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के दूसरे सीजन के लिए खिलाड़ियों की नीलामी शनिवार (नौ दिसंबर) को मुंबई में हुई। नीलामी के लिए शॉर्टलिस्ट की गई 165 खिलाड़ियों में 30 की किस्मत चमकी। पांच टीमों के पास कुल 30 जगह ही खाली थी। गुजरात जायंट्स ने सबसे ज्यादा 10 खिलाड़ियों को अपनी टीम में शामिल किया। वहीं, दिल्ली कैपिटल्स ने सबसे कम तीन खिलाड़ियों पर दांव खेला। हम आपको नीलामी के बाद सभी टीमों के संयोजन के बारे में यहां बता रहे हैं...

मुंबई इंडियंस

पिछले सीजन में चैंपियन बनने वाली मुंबई इंडियंस की टीम ने पांच खिलाड़ियों को खरीदा। उसने दक्षिण अफ्रीका की शबनिम इस्माइल के लिए सबसे ज्यादा 40 लाख रुपये खर्च किए। कृथना बालाकृष्णनन, फातिमा जाफर, अमनदीप कौर और एस सजाना को 10-10 लाख रुपये में खरीदा। मुंबई की कप्तान हरमनप्रीत कौर हैं। फ्रेंचाइजी ने नीलामी में इस्माइल के रूप में एक अनुभवी खिलाड़ी को खरीदा। वहीं, चार युवाओं को खरीदकर बैकअप तैयार किया। ऑस्ट्रेलिया की दिग्गज मेग लैनिंग की कप्तानी वाली दिल्ली कैपिटल्स के पास नीलामी में तीन खिलाड़ियों को खरीदने की जगह ही थी। उसने सभी तीन स्थानों को भरने का काम किया। दिल्ली कैपिटल्स ने ऑस्ट्रेलिया की ऑलराउंडर एनाबेल सदरलैंड को शुरुआती राउंड में ही खरीद लिया। सदरलैंड के लिए फ्रेंचाइजी ने खजाना खोल दिया और दो करोड़ रुपये में उन्हें खरीदा। सदरलैंड संयुक्त रूप से इस नीलामी की सबसे महंगी खिलाड़ी रहीं। दिल्ली ने अश्विनी कुमारी और अपर्णा मंडल को 10-10 लाख रुपये में खरीदा।

रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर

स्मृति मंधाना की कप्तानी वाली रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर का प्रदर्शन पिछले सीजन में कुछ खास नहीं रहा था। टीम इस बार शानदार वापसी करना चाहती है। उसने नीलामी में सात खिलाड़ियों को खरीदा। आरसीबी ने भारत की गेंदबाज एकता बिष्ट को सबसे ज्यादा 60 लाख रुपये में खरीदा। ऑस्ट्रेलिया की ऑलराउंडर जॉर्जिया बेयरहैम के लिए उसने 40 लाख रुपये खर्च किए। उसने ऑस्ट्रेलिया की ऑलराउंडर सोफी मोलिन्यू, भारत की गेंदबाज सिमरन बहादुर, ऑलराउंडर एस मेघना और इंग्लैंड की गेंदबाज केट क्रॉस को 30-30 लाख रुपये में खरीदा। शुभा सतीश के लिए 10 लाख रुपये खर्च किए।

यूपी वॉरियर्स

यूपी वॉरियर्स की टीम ने पांच खिलाड़ियों को खरीदा। एलिसा हीली की कप्तानी वाली इस टीम ने पिछले साल अपने प्रदर्शन से सबको काफी प्रभावित किया था। यूपी वॉरियर्स ने नीलामी में सबसे ज्यादा रुपये वृंदा दिनेश के लिए खर्च किए। बल्लेबाज वृंदा को टीम ने 1.30 करोड़ रुपये में खरीदा। इंग्लैंड की डेनियल वायट और भारत की गौहर सुल्ताना के लिए यूपी ने 30-30 लाख रुपये खर्च किए। साइमा ठाकुर और पूनम खेमनार को 10-10 लाख रुपये में खरीदा।

गुजरात जायंट्स

नीलामी में सबसे ज्यादा किसी टीम के पास जगह खाली थी तो वह गुजरात जायंट्स थी। उसने सभी 10 खाली स्थानों की पूर्ति की। गुजरात ने भारत की युवा ऑलराउंडर काश्वी गौतम के लिए सबसे ज्यादा दो करोड़ रुपये खर्च किए। काश्वी संयुक्त रूप से सबसे महंगी खिलाड़ी साबित हुई। गुजरात ने ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाजी फीबी लिचफील्ड को एक करोड़ रुपये में खरीदा। उसने भारत की वेदा कृष्णमूर्ति, मेघना सिंह और ऑस्ट्रेलिया की लॉरेन चीटल को 30-30 लाख रुपये में खरीदा। त्रिशा पूजिता, कैथरीन ब्राइस, मन्नत कश्यप और तरन्नुम पठान को टीम ने 10-10 लाख रुपये में खरीदा।30 खिलाड़ियों की चमकी किस्मत, काश्वी गौतम और सदरलैंड रहीं सबसे महंगी; देखें टीमों की फाइनल लिस्ट

मुंबई। महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के दूसरे सीजन के लिए खिलाड़ियों की नीलामी शनिवार (नौ दिसंबर) को मुंबई में हुई। नीलामी के लिए शॉर्टलिस्ट की गई 165 खिलाड़ियों में 30 की किस्मत चमकी। पांच टीमों के पास कुल 30 जगह ही खाली थी। गुजरात जायंट्स ने सबसे ज्यादा 10 खिलाड़ियों को अपनी टीम में शामिल किया। वहीं, दिल्ली कैपिटल्स ने सबसे कम तीन खिलाड़ियों पर दांव खेला। हम आपको नीलामी के बाद सभी टीमों के संयोजन के बारे में यहां बता रहे हैं...

मुंबई इंडियंस

पिछले सीजन में चैंपियन बनने वाली मुंबई इंडियंस की टीम ने पांच खिलाड़ियों को खरीदा। उसने दक्षिण अफ्रीका की शबनिम इस्माइल के लिए सबसे ज्यादा 40 लाख रुपये खर्च किए। कृथना बालाकृष्णनन, फातिमा जाफर, अमनदीप कौर और एस सजाना को 10-10 लाख रुपये में खरीदा। मुंबई की कप्तान हरमनप्रीत कौर हैं। फ्रेंचाइजी ने नीलामी में इस्माइल के रूप में एक अनुभवी खिलाड़ी को खरीदा। वहीं, चार युवाओं को खरीदकर बैकअप तैयार किया। ऑस्ट्रेलिया की दिग्गज मेग लैनिंग की कप्तानी वाली दिल्ली कैपिटल्स के पास नीलामी में तीन खिलाड़ियों को खरीदने की जगह ही थी। उसने सभी तीन स्थानों को भरने का काम किया। दिल्ली कैपिटल्स ने ऑस्ट्रेलिया की ऑलराउंडर एनाबेल सदरलैंड को शुरुआती राउंड में ही खरीद लिया। सदरलैंड के लिए फ्रेंचाइजी ने खजाना खोल दिया और दो करोड़ रुपये में उन्हें खरीदा। सदरलैंड संयुक्त रूप से इस नीलामी की सबसे महंगी खिलाड़ी रहीं। दिल्ली ने अश्विनी कुमारी और अपर्णा मंडल को 10-10 लाख रुपये में खरीदा।

रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर

स्मृति मंधाना की कप्तानी वाली रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर का प्रदर्शन पिछले सीजन में कुछ खास नहीं रहा था। टीम इस बार शानदार वापसी करना चाहती है। उसने नीलामी में सात खिलाड़ियों को खरीदा। आरसीबी ने भारत की गेंदबाज एकता बिष्ट को सबसे ज्यादा 60 लाख रुपये में खरीदा। ऑस्ट्रेलिया की ऑलराउंडर जॉर्जिया बेयरहैम के लिए उसने 40 लाख रुपये खर्च किए। उसने ऑस्ट्रेलिया की ऑलराउंडर सोफी मोलिन्यू, भारत की गेंदबाज सिमरन बहादुर, ऑलराउंडर एस मेघना और इंग्लैंड की गेंदबाज केट क्रॉस को 30-30 लाख रुपये में खरीदा। शुभा सतीश के लिए 10 लाख रुपये खर्च किए।

यूपी वॉरियर्स

यूपी वॉरियर्स की टीम ने पांच खिलाड़ियों को खरीदा। एलिसा हीली की कप्तानी वाली इस टीम ने पिछले साल अपने प्रदर्शन से सबको काफी प्रभावित किया था। यूपी वॉरियर्स ने नीलामी में सबसे ज्यादा रुपये वृंदा दिनेश के लिए खर्च किए। बल्लेबाज वृंदा को टीम ने 1.30 करोड़ रुपये में खरीदा। इंग्लैंड की डेनियल वायट और भारत की गौहर सुल्ताना के लिए यूपी ने 30-30 लाख रुपये खर्च किए। साइमा ठाकुर और पूनम खेमनार को 10-10 लाख रुपये में खरीदा।

गुजरात जायंट्स

नीलामी में सबसे ज्यादा किसी टीम के पास जगह खाली थी तो वह गुजरात जायंट्स थी। उसने सभी 10 खाली स्थानों की पूर्ति की। गुजरात ने भारत की युवा ऑलराउंडर काश्वी गौतम के लिए सबसे ज्यादा दो करोड़ रुपये खर्च किए। काश्वी संयुक्त रूप से सबसे महंगी खिलाड़ी साबित हुई। गुजरात ने ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाजी फीबी लिचफील्ड को एक करोड़ रुपये में खरीदा। उसने भारत की वेदा कृष्णमूर्ति, मेघना सिंह और ऑस्ट्रेलिया की लॉरेन चीटल को 30-30 लाख रुपये में खरीदा। त्रिशा पूजिता, कैथरीन ब्राइस, मन्नत कश्यप और तरन्नुम पठान को टीम ने 10-10 लाख रुपये में खरीदा।

सनी लियोन की तर्ज़ पर शमा सिकंदर! हैट के साथ शेयर की न्यूड फोटो

नई दिल्ली। हाल ही में बॉलीवुड एक्ट्रेस सनी लियोनी का एक न्यूड फोटोशूट काफी वायरल हुआ था जिसमें वो अपनी बॉडी को हैट से ढकती हुई नज़र आ रही थीं। ये फोटोशूट सनी ने फेबस फोटोग्राफर डब्बू रतनानी के कैलेंडर के लिए करवाया था। एक्ट्रेस की ये फोटो इंटरनेट पर आग की तरह फैली थी। सनी के बाद अब एक्ट्रेस शमा सिकंदर ने भी अपने इंस्टाग्राम पर इससे मिलती-जुलती एक फोटो शेयर की है। शमा ने अपने इंस्टाग्राम पर एक न्यूड फोटो शेयर की है जो काफी वायरल हो रही है। इस फोटो में शमा एक कमरे में खड़ी नज़र आ रही हैं और उन्होंने अपनी बॉडी को सिर्फ काले रंग की जालीदार हैट से ढका हुआ है। नज़रें झुकाए खड़ीं शमा ने सामने से अपने हाथ में एक हैट पकड़ रखी है और वो नीचे की तरफ देखते हुए पोज़ दे रही हैं। एक्ट्रेस की ये फोटो काफी ज्यादा बोल्ड है और ताबड़तोड़ वायरल हो रही है। वैसे इससे पहले शमा अपनी एक से बढ़कर एक फोटो इंस्टाग्राम पर शेयर कर चुकी हैं जो आए दिन वायरल होती रहती हैं। डब्बू रतनानी के कैलेंडर के लिए करवाए गए फोटोशूट की तस्वीर सनी ने अपने इंस्टाग्राम पर भी शेयर की थी। इस तस्वीर में सनी लियोनी एक पोल के सहारे खड़ी नज़र आ रही हैं और पोज दे रही हैं। सनी ने अपने एक हाथ में एक हैट पकड़ रखी है जिससे वो अपनी बॉडी को छुपा रही हैं और उनका दूसरा हाथ उनके सिर पर है। इस तस्वीर को शेयर करते हुए सनी ने कैप्शन में लिखा, गर्मी यहां है।

पार्टी में दिखना है सबसे खास तो बॉलीवुड सुंदरियों की तरह पहनें येलो साड़ी

अगर आप पार्टी में कुछ खास पहनने का मन बना रही हैं तो ऐसे में येलो साड़ी पहनना यकीनन एक अच्छा आईडिया है। येलो कलर की सिंपल साड़ी भी आपके लुक में चार-चांद लगा सकती है। बॉलीवुड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण से लेकर विद्या बालन तक येलो साड़ी में खुद को स्टाइल कर चुकी हैं। येलो एक ऐसा कलर है, जो बेहद ही वाइब्रेंट और रिफ्रेशिंग माना गया है। खासतौर से, इस ब्राइट कलर को अक्सर समर्स में लड़कियां अपने वार्डरोब में शामिल करती हैं। यूं तो येलो कलर के टॉप से लेकर जैकेट व सूट आदि आसानी से पहने जा सकते हैं, लेकिन अगर आप पार्टी में कुछ खास पहनने का मन बना रही हैं तो ऐसे में येलो साड़ी पहनना यकीनन एक अच्छा आईडिया है। येलो कलर की सिंपल साड़ी भी आपके लुक में चार-चांद लगा सकती है। तभी तो बॉलीवुड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण से लेकर विद्या बालन तक येलो साड़ी में खुद को स्टाइल कर चुकी हैं। तो चलिए देखते हैं इन बॉलीवुड एक्ट्रेस के येलो साड़ी लुक्स और करते हैं।

पासपोर्ट रिन्यू न होने को लेकर महाराष्ट्र सरकार पर फूटा कंगना का गुस्सा, आमिर खान के इस बयान का जिक्र कर साधा निशाना

नई दिल्ली। बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनोट इन दिनों अपने पासपोर्ट रिन्यूअल को लेकर मुश्किलों का सामना कर रही हैं। इसको लेकर सोमवार को उन्होंने बॉम्बे हाईकोर्ट में अपील की, जिसके बाद कोर्ट ने अगली सुनवाई के लिए 25 तारीख दे दी है। वहीं पासपोर्ट रिन्यू न होने को लेकर अब कंगना रनोट ने महाराष्ट्र सरकार पर अपना गुस्सा निकाला है। दरअसल बीते कुछ दिनों में कंगना रनोट कई विवादों में आई हैं, जिसके चलते उनके खिलाफ कई मामले दर्ज हैं। अभिनेत्री के खिलाफ बांद्रा पुलिस ने राजद्रोह और जानबूझकर नफरत फैलाने का भी मामला दर्ज किया हुआ है। ऐसे में रीजनल पासपोर्ट ऑफिस ने कंगना रनोट का पासपोर्ट रिन्यू करने से मना कर दिया है। इसको लेकर अब कंगना रनोट ने अपने कू एप के जरिए अपना गुस्सा निकाला है। उन्होंने कू एप पर लिखा, महाविनाशकारी सरकार (महाराष्ट्र सरकार) ने मेरा अप्रत्यक्ष उत्पीड़न फिर से शुरू कर दिया है, पासपोर्ट रिन्यूअल के लिए मेरा अनुरोध खारिज कर दिया गया है क्योंकि मुनव्वर अली सैयद नाम के एक सड़क किनारे के रोमियो ने मुझ पर राजद्रोह का मामला दर्ज किया था। इस एफआईआर की वजह से अदालत ने पासपोर्ट के लिए मेरे अनुरोध को खारिज कर दिया। कंगना रनोट यहीं नहीं रुकीं उन्होंने अपनी बात को पूरा करने के लिए आमिर खान के एक बयान का सहारा लिया। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम की स्टोरी में लिखा, जब आमिर खान ने भारत को असहिष्णु कहकर बीजेपी सरकार को नाराज किया, तो किसी ने भी उनका पासपोर्ट वापस नहीं लिया। उनकी फिल्मों या शूटिंग को किसी भी तरह से रोका या परेशान नहीं किया गया। सोशल मीडिया पर कंगना रनोट के यह दोनों पोस्ट वायरल हो रहे हैं। आपको बता दें कि कंगना रनोट और उनकी रंगोली चंदेल के खिलाफ सोशल मीडिया के जरिए सांप्रदायिक तनाव फैलाने, अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करने, बॉलीवुड और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के खिलाफ ट्वीट्स और इंटरव्यूज में अपमानजनक भाषा का प्रयोग करने के आरोपों को लेकर बांद्रा पुलिस एफआईआर दर्ज की है। वहीं इस मामले की सुनवाई जस्टिस एसएस शिंदे और मनीष पिटाले की डिवीजन बेंच कर रही है।

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्पलक्े स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एवं पहला तल, निधि काम्पलेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।

समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टाचार समाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।